संत श्री आसारामजी आश्रम

द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

१९९६

6/-

द्र का माहात्म्य ★ यदा यदा हि धर्मस्य ... ★ युवानों के लिए सफलता की कुँजी

वर्ष : ७
अंक : ४५
९ सितम्बर १९९६

सम्पादक : क. रा. पटेल
प्रे. खो. मकवाणा

मूल्य : रू. ६-००

सदस्यता शुल्क

भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. ५०/-
(२) आजीवन : रू. ५००/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : (०७९) ७४८६३१०, ७४८६७०२.

प्रकाशक और मुद्रक : क. रा. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५ ने
विनय प्रिन्टिंग प्रेस, मीठाखली, अहमदाबाद, पारिजात प्रिन्टरी, राणीप, अहमदाबाद में छपाकर प्रकाशित किया।

समाज में तो अनादिकाल से दैवी संपदा एवं आसुरी संपदा के लोग होते ही हैं। संतों का तेजोद्वेष करनेवाले लोग जलते रहते हैं। संत के सान्निध्य में आनेवाले लोग श्रद्धालु, सज्जन, सीधे-सादे होते हैं जबकि दुष्ट प्रवृत्ति करनेवाले लोग कुटिलतापूर्वक कुप्रचार करने में कुशल होते हैं। फिर भी जिन संतों के पीछे सजाग समाज होता है उन संतों के आसपास उठते कुप्रचार के आँधी-तूफान समय पाकर शांत हो जाते हैं और संतों की सत्प्रवृत्तियाँ प्रकाशमान हो उठती हैं।

प्रस्तुत है...

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें।

र...क्षा...बं...ध...न...

रक्षा कर हृदय कोष की, पा ले गुरु का ज्ञान।
सम संतोष सुविचार संग, जीवन हो निष्काम ॥
हीन भावना त्याग दे, तेरे उर अंतर में राम।
साधु संगति कर सदा, संचित कर हरिनाम ॥

क्षमा प्रेम उदारता परदुःख का अहसास।
सार्थक जीवन है वही, रखे न कोई आस ॥
तत्पर हो गुरु सेवा में प्रभु में दृढ़ विश्वास।
परम तत्त्व को पा लिया हुआ भेद भरम का नाश ॥

बंध मोक्ष से है परे, जन्म, कर्म से दूर।
व्यापक सर्व में रम रहा, वह नूरों का नूर ॥
आदि अंत जिसका नहीं वह साहिब मेरा हजूर।
दिव्य दृष्टि से जान ले 'साक्षी' है भरपूर ॥

धर्म दया और दान संग जीवन में हो उमंग।
प्रभुप्रेम की प्यास हो, लगे नाम का रंग ॥
श्रद्धा और विश्वास की, मन में हो तीव्र तरंग।
रोम रोम में रम रहा, फिर भी रहे निःसंग ॥

नभ जल थल में है वही, सर्व में हरि का वास।
नूरे नजर से देख ले, वही दिव्य प्रकाश ॥
लाली लहू में है वही कण कण में है निवास।
खोज ले मन-मंदिर में सद्गुरु सदा है पास ॥

ज...न...मा...ष्ट...मी...

जगत पिता जगदीश का कर गुरुवर में दीदार।
कृष्ण कन्हैया बन कभी नंदनंदन का अवतार ॥
गीता के निज ज्ञान में है आत्मतत्त्व ही सार।
शिवस्वरूप तेरा आत्मा ये नाम रूप हैं असार ॥

न्यंता सबका एक है अलख अभेद अनादि।
समता भाव में रम रहा, न हर्ष न शोक विषाद ॥
काया माया से परे न आधि व्याधि उपाधि।
प्रेम भक्ति विश्वास ही, जिसकी सहज समाधि ॥

मात पिता सत्शास्त्र गुरु, सबका कर सम्मान।
रोम रोम में रम रहा, वह अंतर्यामी राम ॥
नंदनंदन गोपाल वह मीरा का घनश्याम।
मन-मंदिर में बस रहा, दिव्य स्वरूप महान ॥

षडरस हैं फीके सभी सुमधुर रस हरिनाम।
पी ले दिल की प्याली से मस्त फकीरी जाम ॥
गुरुचरणों में बैठकर धर ले प्रभु का ध्यान।
ये जीवन पावन कर ले, कर सेवा निष्काम ॥

टर जाएगी विपत्ति भी आस्था गुरु में राख।
जप ध्यान और नाम संग ज्ञान का हो संगाथ ॥
दिलबर तो दिल में बसा कर 'स्व' से मुलाकात।
भवबंधन सब मिट गया रहा सद्गुरु का जब साथ ॥

मीत वह साचा जानिये जो संकट में हो सहाय।
रंजिश गम, दुःख दर्द में मन न कभी घबराय ॥
हर हाल में मस्त हो 'साक्षी' भाव जगाय।
मानव तन में देव सम, साधक वो कहलाय ॥

- जानकी चंदनानी 'साक्षी'
अहमदाबाद

गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर पूज्यश्री का पावन संदेश

अहमदाबाद आश्रम

लघु से गुरु की ओर अग्रसर बनो

'श्रीमद्भागवत माहात्म्यम्' के प्रथम श्लोक में आता है :

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥

'जो सत् है, चित् है और आनंदस्वरूप है, जिसकी सत्ता से सृष्टि की उत्पत्ति और स्थिति होती है एवं जिसमें यह सृष्टि विलीन हो जाती है, जो तीनों तापों का नाश करनेवाले हैं उन सच्चिदानंद परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण को हम नमस्कार करते हैं ।'

आज तक जिसको 'मैं-मैं' मान रहे थे वह लघु 'मैं' है । व्यासपूर्णिमा हमें लघु 'मैं' में से उठाकर गुरु 'मैं' में स्थापित करती है । इसी व्यासपूर्णिमा को गुरुपूनम कहते हैं ।

अंग्रेजी भाषा में एक शब्द है : Understand. इसका सामान्य अर्थ है 'समझना' लेकिन आध्यात्मिक अर्थ में इसी शब्द को लें तो Under अर्थात् 'नीचे' और Stand अर्थात् 'खड़ा होना' । तुम्हारी वृत्तियों की, नाम और रूप की, 'मैं'-'मेरे' की गहराई में जो स्वरूप है, उसमें जो टिक जाता है वह रहस्य समझ जाता है, वह ठीक तरह से Understand हो जाता है ।

लोग बोलते हैं कि धर्म बहुत-से हैं लेकिन जिन्होंने धर्म का अमृत पिया है वे कहते हैं कि बहुत-सारे धर्म नहीं, एक ही धर्म है चाहे फिर ईसाई धर्म का प्रतीक लेकर चलो या इस्लाम का, चाहे बौद्ध का लेकर चलो या हिन्दुत्व का लेकिन मूल में, गहराई में देखा जाये तो एक ही धर्म है । कोई किसी भी जाति-पाँति का हो, वह धर्म के रस को तभी उपलब्ध होता है जब वह ठीक Understand होता है, थोड़ा नाम-रूप से परे होता है, प्रार्थना करते-करते अपना क्षुद्र अहं भूल जाता है, प्रार्थना करते-करते अपनी क्षुद्र इच्छा को ईश्वराधीन कर देता है । ध्यान करते करते क्षुद्र 'मैं' को भूल जाता है और गुरु 'मैं' में जब Understanding हो जाता है तो उसका काम बन जाता है । वह मुक्ति को पा लेता है ।

लोग बोलते हैं कि धर्म बहुत-से हैं लेकिन जिन्होंने धर्म का अमृत पिया है वे कहते हैं कि बहुत-सारे धर्म नहीं हैं, एक ही धर्म है ।

जो हमारी बिखरी हुई वृत्तियों को व्यवस्थित करें, जो हमारे लघु आकर्षणों को मिटाकर धीरे-धीरे हमारे में गुरुत्व लायें, जो लघु को गुरु बना दें, जो क्षुद्र को महान् बनाने की व्यवस्था करें ऐसे पुरुषों को हम व्यास कहते हैं ।

जो हमारी बिखरी हुई वृत्तियों को व्यवस्थित करें, हमारे लघु आकर्षणों को मिटाकर धीरे-धीरे हम में गुरुत्व लायें, लघु को गुरु बना दें, ऐसे पुरुषों को हम व्यास कहते हैं ।

अठारह पुराणों का सर्जन करनेवाले भगवान वेदव्यासजी अपने कृष्ण वर्ण के कारण कृष्ण द्वैपायन के नाम से सुप्रसिद्ध हुए । वे महापुरुष आठ-आठ घण्टे की समाधि में बैठा करते थे । जब भूख लगती तब बदरी के पेड़ों से बेर चुन-चुनकर खा लिया करते थे इसलिए उनका दूसरा नाम पड़ा बादरायण । हमारी बिखरी हुई वृत्तियों को सुव्यवस्थित करने में उन समाधिनिष्ठ पुरुष ने, कारक पुरुष ने अठारह पुराणों का सर्जन किया फिर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ । परोपकार करने में कोई संतुष्ट हो जाता है तो समझो कि उसने अभी परोपकार के आनन्द का अनुभव किया ही नहीं । व्यासजी ने

ही विश्व को पाँचवाँ वेद 'महाभारत' प्रदान किया जो कि गुरुपूनम के पावन पर्व पर ही पूर्ण सम्पन्न हुआ । भक्तिरस से भरपूर ग्रंथ 'श्रीमद्भागवत' की रचना भी महर्षि वेदव्यासजी द्वारा ही हुई है । विश्व के प्रथम आर्ष ग्रंथ, प्रथम दार्शनिक ग्रंथ 'ब्रह्मसूत्र' के निर्माण का श्रेय भी उन्हीं को जाता है । ब्रह्मसूत्र का आरंभ भी गुरुपूनम के दिन हुआ था ।

सद्गुरु की महिमा बड़ी न्यारी है । जब तक वे विद्यमान होते हैं तब तक तो लाखों-लाखों श्रद्धालु जन उनसे लाभान्वित होते ही हैं किन्तु उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात् भी उन्हें श्रद्धा-प्रेम से स्मरण करनेवालों का बेड़ा पार हो जाता है ।

मेरे गुरुदेव का दिव्य वपु पालनपुर (गुज.) में जब इस धरा से विदा ले रहा था तब उन्होंने मेरी गोद में ही सिर रखकर आखिरी श्वास लिये थे । मानो उनकी आँखें कह रही थीं कि : 'ले ले, सब ले ले ।' आँखें बन्द होने के पहले वे आँखें बहुत कुछ बरसी थीं । उस समय भी वे मुझे कुछ-न-कुछ सिखा रहे थे कि देखो, यह सब शरीर को होता है, मुझे कुछ नहीं होता है... यह तो प्रारब्ध है...

धन्य थीं वे घड़ियाँ, जब हम गुरुदेव के श्रीचरणों में पहुँचे थे और दुःखद थीं वे घड़ियाँ जब गुरुदेव विदाई ले रहे थे सदा के लिये । उन दुःखद घड़ियों में भी वे ज्ञान और सुख बरसाते-बरसाते सुखस्वरूप में व्याप्त हो गये ।

धन्य थीं वे घड़ियाँ, जब हम गुरुदेव के चरणें में पहुँचे और दुःखद थीं वे घड़ियाँ जब गुरुदेव विदाई ले रहे थे सदा के लिये । उन दुःखद घड़ियों में भी वे ज्ञान और सुख बरसाते-बरसाते सुखस्वरूप में व्याप गये ।

पूज्यश्री लीलाशाह देव ने स्थूल शरीर की लीला तो समाप्त की लेकिन उनका प्रसाद तो अभी भी मेरे अन्तःकरण से अपना नित्य नवीन रस साधकों पर बरसा रहा है ।

आओ श्रोता तुम्हें सुनाऊँ, महिमा लीलाशाह की ।
सिंध देश के संतशिरोमणि, बाबा बेपरवाह की ॥
बचपन में ही घर को छोड़ा, गुरुचरन में आन पड़ा ।
तन मन धन सब अर्पण करके ब्रह्मज्ञान में दृढ़ खड़ा ।
नदी पलट सागर में आयी, वृत्ति अगम अथाह की ॥
आओ श्रोता...
योग की ज्वाला भड़क उठी और भोग भरम को भस्म किया ।
तन को जीता मन को जीता, जन्म-मरण को खत्म किया ।
नदी पलट सागर में आयी, वृत्ति अगम अथाह की ॥
आओ श्रोता...
सुख को भरते दुःख को हरते, करते ज्ञान की बात जी ।
जग की सेवा लाला नारायण, करते दिन रात जी ।
जीवन्मुक्त विचरते हैं ये, दिल है शहनशाह की ॥
आओ श्रोता...

कैसी रही होगी उन गुरुदेव की अमीदृष्टि... विशाल दृष्टि !

बुद्ध जब आखिरी श्वास ले रहे थे तब उन्होंने शिष्यों को बुलाकर कहा :

''भिक्षुओं ! अब समय नहीं है । यह शरीर छूट रहा है । खास बात सुन लेना । जो गुरुभाइयों में भेद पैदा करे, जो साधकों-साधकों में भेद पैदा करे ऐसे मूर्ख-नादान की बातों में कभी मत आना और उसको कभी क्षमा नहीं करना । जो तुम लोगों में फूट डाले उस पर तुम रहम मत खाना, वरन् सावधान रहना । राग-द्वेष से अपने को बचाकर, एकत्रित होकर, संगठित होकर दैवी कार्य करते रहना ।''

धनभागी रहे होंगे वे शिष्य, जो गुरु के दैवी कार्य करते-करते आज पूरे विश्व में प्रकाश फैला रहे हैं ।

धनभागी रहे होंगे वे शिष्य, जो गुरु के दैवी कार्य करते-करते आज पूरे विश्व में बुद्ध के प्रकाश को फैला रहे हैं ।

बुद्ध जैसे महापुरुष जब तक इस धराधाम पर विद्यमान रहते हैं तब तक तो लघु में से गुरु बनाने का काम चलता ही रहता है । जाते जाते भी वे ऐसा संकल्प विश्व में प्रसारित कर जाते हैं कि संसार की मानवजाति 'लघु' न रहे । 'लघु' अर्थात् 'छोटा' । आँखों को

दृश्य दिखाकर, कान को 'तकधिनाधिन...' सुनाकर, नाक को परफ्यूम्स आदि सुँघाकर और जीभ को स्वाद चखा-चखाकर मजा लिया किन्तु एक दिन तो ये हड्डियाँ मिट्टी में मिल जानेवाली हैं। इन विकारी इन्द्रियों में यह ताकत कहाँ कि तुम्हें शाश्वत सुख दे सकें... बड़ा सुख दे सकें ?

इन विकारी इन्द्रियों में वह ताकत कहाँ कि तुम्हें शाश्वत सुख दे सकें... बड़ा सुख दे सकें ?

तुम 'गुरु' होकर लघु परिस्थितियों को सत्य मानते हो और अपने सत्यस्वरूप को भूले हुए हो। इसीलिए भगवान् कृष्ण द्वैपायन ने श्रीमद्भागवत में प्रारंभिक श्लोक में ही लिख दिया है :

सच्चिदानंदरूपाय विश्वोत्पत्त्यादिहेतवे ।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥

'विश्व की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय के जो हेतुस्वरूप हैं तथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक- तीनों प्रकार के तापों का नाश करनेवाले हैं, उन सच्चिदानंद-स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण को हम नमस्कार करते हैं ।'

ब्रह्मसूत्र में लिखा है :
अथातो ब्रह्मजिज्ञासा ।

जिज्ञासा करो तो उस ब्रह्म की करो ।

गांधीजी अगर झूठ-कपट करते तो वकालत में तो सफल रहते लेकिन उस झूठ-कपट से मोहनलाल गांधी वकील ही रह जाते, बापू नहीं बन पाते ।

आषाढ़ माह की पूर्णिमा के दिन से ही संन्यासी अपने चातुर्मास का आरंभ करते हैं । देवतागण प्रसन्न हुए और वरदान दिया कि छोटी-से-छोटी मतिवाला, छोटी-से-छोटी प्रवृत्तिवाला, लघु से लघु आकर्षण में उलझनेवाला उन गुरुओं के महान् अनुभव को प्राप्त कर सके ऐसे ग्रंथ रचनेवाले व्यासजी का जय-जयकार विश्व में हो ताकि लोगों का जीवन भी जय-जयकार-मय बन जाय । इसीलिए इस दिन को उन्होंने वरदान दिया कि : इस आषाढ़ी पूनम को जो सत्शिष्य अपने सद्गुरु के द्वार आयेगा, उसको वर्षभर के पावनपर्व मनाने का पुण्य प्राप्त होगा ।

गांधीजी अगर झूठ-कपट करते तो वकालत में तो सफल रहते लेकिन उस झूठ-कपट से लघु सुख ही मिलता और उस लघु सुख में ही वे उलझे रहते तो मोहनलाल गांधी वकील ही रह जाते, बापू नहीं बन पाते और उनके आगे ब्रिटिश शासन नहीं झुक जाता। महात्मा गांधी लघु आकर्षणों एवं व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर, 'बहुजन-हिताय... बहुजनसुखाय' में लगे, गुरुत्व के रास्ते लगे तो ब्रिटिश शासन को भी हार माननी पड़ी। जब गांधीजी ने शरीर छोड़ा तब दुनिया भर के झण्डे उनकी शान में झुकाये गये थे । यह गुरुओं का प्रभाव है, गुरुज्ञान का प्रभाव है ।

गुरुओं का गुरु जो परब्रह्म परमात्मा है उसके नाते जो कर्म किया जाता है, उस कर्म में अपनी अद्भुत शक्ति होती है। विद्यार्थीकाल में अगर संयम नहीं होगा तो वह विद्यार्थी बड़ा नहीं बन सकेगा । संगीतज्ञ अगर संयत होकर साज नहीं बजायेगा तो वह बढ़िया संगीतज्ञ नहीं हो सकेगा। विद्वान अगर लघु आकर्षणों से बचकर विद्याध्ययन नहीं करेगा तो बड़ा विद्वान नहीं हो सकेगा। ऐसे ही जीवात्मा अगर छोटे आकर्षणों को छोड़कर, संयत होकर साधना में नहीं लगेगा तो वह परब्रह्म परमात्मस्वरूप को नहीं जान सकेगा । वास्तव में तो वह है ही ब्रह्म, लेकिन लघु आकर्षणों, मन की मलिनता, चित्त की चंचलता एवं अहंकार की खटपट के कारण वह अपने वास्तविक स्वरूप को भूल बैठा है ।

गुरुपूर्णिमा का यह पर्व हमें ओज-तेजवाले साधकों का संग करा देता है । गुरुओं का सान्निध्य तथा कृपाकटाक्ष हमें मदद करता है तो हम लघु जीवन में भी, खींचते-घसीटते जीवन में भी कभी-कबार ऊँची उड़ान की अनुभूतियाँ कर लेते हैं और वे अनुभूतियाँ हमें बार-बार गुरु के द्वार पर लाने को बाध्य कर देती हैं ।

गुरु किसे कहा जाता है ? गुरु उन्हें कहा जाता है जो लघु को गुरु बनाने की ताक में रहें, छोटे

को महान् बनाने के प्रयत्न में रहें । ऐसे गुरुओं का आदर किसी व्यक्ति का आदर नहीं है । मानव समाज को जब तक सच्चे सुख की, सच्चे ज्ञान की माँग रहेगी, तब तक ऐसे सद्गुरुओं का पूजन होता ही रहेगा । मानव जाति को जब तक अपने उत्तम लक्ष्य की स्मृति बनी रहेगी तब तक उत्तम पुरुषों का आदर बना रहेगा ।

चार प्रकार के लघु लाभ हैं और चार प्रकार के गुरु (बड़े) लाभ हैं । धनलाभ, सत्तालाभ, स्वास्थ्यलाभ और भोगलाभ । इन्हें लाभ तो मानना ही पड़ेगा किन्तु ये लघु लाभ हैं । जिनको बड़ी-बड़ी सत्ताएँ मिलीं, धन मिला, स्वास्थ्य मिला और सुख-भोग मिले किन्तु उनमें गुरु लाभ का मिश्रण नहीं हुआ तो वे खूब परेशान हुए, खूख दुःखी हुए और खूब बदनाम हुए तथा नरकों में पड़े रहे । फिर चाहे वे लोग रावण हों या कंस, हिटलर हों या सीज़र । जिन्होंने लघु लाभों में आसक्ति न करके गुरु लाभ भी उसमें मिला दिया वे श्रेष्ठ पुरुष होकर पूजे गये । वे यहाँ भी सुखी रहे और परलोक में भी सुखी रहे ।

गुरु लाभ अर्थात् बड़ा लाभ... यानी भक्तिलाभ, शांतिलाभ, प्रीतिलाभ, आत्म-लाभ । भक्तिलाभ से भगवद्भाव बना रहता है, चित्त पर राग और द्वेष की चोट नहीं लगती । सुख की अनुकूलता एवं दुःख की प्रतिकूलता आने पर भी भक्त समझता है कि दुःख और सुख दोनों मेरे प्रभु का प्रसाद है । वह सुख-दुःख दोनों से अनासक्त रहकर उसमें भगवद्भाव मिला देता है ।

जिसके जीवन में शांतिलाभ है, उसे आवश्यक सामर्थ्य मिल जाता है और शांति के प्रसाद से दोष छोड़ने का सामर्थ्य भी आ जाता है । दोषों के बीच रहते हुए भी निर्दोष जीवन में टिकने की शक्ति आ जाती है ।

प्रीतिलाभ नित्य नवीन रस भरता है । रस के लिए ही तो सारा संसार भाग रहा है लेकिन मनुष्य क्लबों से, शराब-कबाब से रस लेकर सुखी होना चाहता है । जितना लघु रस लेकर कोई सुखी होना चाहता है उतना ही अधिक वह दुःखी पाया जाता है । अमेरिका में ६५ प्रतिशत शादियाँ तलाक में बदलती हैं । दो करोड़ लोग स्नायु रोग से पीड़ित हैं । हर दस सेकंड में एक सेंधमारी होती है, हर रोज ६४ व्यक्ति 'एड्स' के शिकार हो जाते हैं । हर सोलह मिनट में एक कार की चोरी हो जाती है । हर १६ सेकंड में एक बच्चा अपहृत हो जाता है । हर छः मिनट में एक बलात्कार होता है । दस लाख लोग भावनात्मक समस्याओं से ग्रसित हैं । वर्ष में तीन लाख लोग आत्महत्या करने का प्रयास करते हैं और उनमें से ५६ हजार लोग अपने प्रयास में सफल भी हो जाते हैं । हर एक लाख लोगों में ४२५ कैदी हैं जबकी भारत में हर एक लाख लोगों में सिर्फ २३ कैदी हैं ।

हम किसी देश की निंदा में नहीं मानते लेकिन बताना चाहते हैं कि लघु लाभ में फँसने के कारण लोग बेचारे दुःखी रहते हैं । जिन्हें सद्गुरु के सान्निध्य में गुरुपूनम मनाने का अवसर मिल जाता है । वे ऐसे भीषण वातावरण में भी, उन देशों में भी बच जाते हैं । फिर चाहे वे श्रीकृष्ण को मानें या क्राइस्ट को, राम को मानें या अल्लाह को, लेकिन गुरुओं के परंपरागत प्रसाद को जिन्होंने पाया है वे भोगी जीवन में, भोगी देश में रहते हुए भी अन्तरात्मा

> *गुरुओं का गुरु जो परब्रह्म परमात्मा है उसके नाते जो कर्म किया जाता है, उस कर्म में अद्भुत शक्ति होती है ।*

> *गुरुपूर्णिमा का यह पर्व हमें लघु जीवन में भी ऊँची उड़ान की अनुभूतियाँ करा देता है ।*

> *गुरुओं के परंपरागत प्रसाद को जिन्होंने पाया है वे भोगी जीवन में, भोगी देश में रहते हुए भी अन्तरात्मा का, योगियों का सुख लेने में सफल हो रहे हैं ।*

का, योगियों का सुख लेने में सफल हो रहे हैं । यह भी तो व्यासजी का ही प्रसाद है ।

भक्तिलाभ, शांतिलाभ, प्रीतिलाभ और आत्मलाभ । आत्मलाभ तो ऐसा लाभ है महाराज ! कि जिसके आगे लघु लाभों की कोई कीमत ही नहीं है ।

जब मिला आतम हीरा, जग हो गया सवा कसीरा ।

आत्मलाभ तो ऐसा बढ़िया लाभ है कि जिसके आगे इन्द्र का वैभव भी कोई *मायना नहीं रखता है ।

आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते ।
आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते ॥

यह आत्मलाभ मिलता है सद्गुरु के सान्निध्य में आने से, सत्संग-श्रवण करने से ।

गुरुपूर्णिमा का, व्यासपूर्णिमा का पावन महोत्सव हमें लघु लाभों में अनासक्त बनाकर गुरु लाभ की ओर प्रोत्साहित करता है, प्रेरणा देता है और गुरु-प्रसाद चखने का भी अवसर दे देता है ।

नारायण हरि... नारायण हरि... नारायण हरि...

हे व्यासदेव । हे ब्रह्मवेत्ताओं ! आत्मारामी संतों ! चाहे आप किसी भी शरीर में, किसी भी नाम में थे या हैं, आपके श्रीचरणों में हृदयपूर्वक हमारे प्रणाम हैं...

❀

अहमदाबाद में गुरुपूर्णिमा महोत्सव

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

अहमदाबाद आश्रम में गुरुपूर्णिमा महोत्सव के लिये काफी दिनों पहले से ही व्यापक रूप में तैयारियाँ शुरू हो गयी थीं । देश-विदेश के विभिन्न प्रांतों व नगरों से इस व्यासपूर्णिमा के पावन पर्व पर अपने पूज्य सद्गुरुदेव के दर्शनार्थ आश्रम में दिनांक २८ जुलाई से ही श्रद्धालुओं, भक्तों का आना शुरू हो गया था । जैसे-जैसे महोत्सव का दिन पास आता जा रहा था वैसे-वैसे पूज्य बापूजी के दर्शन के लिये साधकों-भक्तों की उत्कंठा बढ़ती जा रही थी । कोई बस से आ रहा था तो कोई ट्रेन से आ रहा था, कोई वायुयान से आ रहा था तो कई जगहों से श्रद्धालुगण ने सैकड़ों की तादाद में इन ब्रह्मनिष्ठ संत के दर्शन के लिये पैदल यात्रा पर ही निकल पड़े थे । धन्य हैं वे भक्तजन जो परमात्मा की मस्ती में मस्त रहनेवाले ऐसे सत्पुरुष का दीदार करने के लिये अपने सभी झंझटों को छोड़कर आश्रम के लिये निकल पड़े । नहीं तो, देश-विदेश में करोड़ों अरबों लोग हैं जिनको यह सोचने-समझने का समय ही नहीं है कि यह मनुष्य जन्म हमें क्यों मिला है और ऐसा अनमोल मानव तन पाकर हमें क्या करना चाहिये ।

वह सुनहरा दिन नजदीक आया । दिनांक २९ जुलाई को पूज्य बापूजी दिल्ल से वायुयान द्वारा अहमदाबाद पहुँचे । कुछ समयोपरांत ही आश्रम के परिसर में पूज्यश्री व्यासपीठ पर आसनस्थ हुए । सत्संग पांडाल व आश्रम परिसर में एकत्रित श्रद्धालुगणों ने उनके दिव्य दर्शन कर श्रद्धा-भक्ति से उन्हें नमन किया । पूज्य बापूजी ने उसी समय से महोत्सव के शुभारंभ का शंखनाद किया एवं सत्संगोपरांत देर रात तक गुरुपूर्णिमा के दर्शनार्थियों की लाइन चली ।

दिनांक ३० जुलाई को गुरुपूर्णिमा के इस पावन दिवस पर तो आश्रम का वातावरण देखते ही बनता था क्योंकि दूर-सुदूर क्षेत्रों से आनेवाले दर्शनार्थियों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी । व्यवस्थापकों ने सोचा था कि इस बार इन्दौर व दिल्ली में भी गुरुपूनम होने के बाद यहाँ इस बार दर्शनार्थियों की भीड़ ज्यादा नहीं होगी लेकिन हुआ उल्टा ही । इस पवित्र दिन आश्रम और आसपास के मैदान में पैर रखने की भी जगह नहीं बची । सुबह का शान्त व सुरम्य वातावरण... साथ ही पवित्र 'हरि ॐ' की ध्वनि का गुँजन पूरे वातावरण को मंगल कर रहा था । श्रद्धालुजन प्रभात संध्या की बेला में अपने अंतरतम में ही छुपे हुए उस परमेश्वर के ध्यान में डूबे जा रहे थे । बड़ा ही मनमोहक दृश्य उपस्थित था । आश्रम परिसर खचाखच भर जाने पर हजारों साधक दिनांक २९ की रात को एक बजे से ही पूज्य बापूजी के दर्शन के लिये कतारबद्ध हो चुके थे ।

...और वह समय भी नजदीक आया जिसके

लिये एकत्रित भक्तजनों के हृदय व्याकुलता की चरम सीमा पर पहुँच चुके थे । पूज्य बापूजी जैसे ही सुबह व्यासपीठ पर विराजे वैसे ही तालियों की लयबद्ध ध्वनि व हरिनाम के उद्घोष से पूरा आश्रम परिसर गुँजायमान हो उठा । कितने सौभाग्यशाली रहे होंगे वे लोग, जिन्होंने इस पवित्र दिवस पर पूज्य बापूजी के दर्शन व सत्संगामृत का पान कर जीवन कृतकृत्य किया हो । इस दौरान अपने ब्रह्मलीन सद्गुरुदेव परम पूजनीय श्री लीलाशाहजी बापू का स्मरण करते पूज्य बापूजी की आँखों से प्रेमाश्रुओं की धारा बह निकली । साथ ही सत्संग-पांडाल में बैठे भक्तजन भी अश्रुपूरित नेत्रों को छलकने से न रोक सके ।

सत्संग के समापन के बाद शुरू हुआ दर्शनार्थियों का सिलसिला जो कि रात के ९ बजे तक अनवरत चलता रहा । कतारबद्ध, अनुशासित व बिना कोलाहल किये भक्तों-श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन किये । कोई भी भक्त व्यासपीठ पर बिराजमान पूज्यश्री के समक्ष दो तीन सेकन्ड से अधिक समय खड़ा नहीं रह पाता था । इतने कम समय में भी वह षोड़श पूजा तो नहीं पर मन ही मन मानसपूजा जरूर कर गया । यह भाव श्रद्धालुओं की आँखों में पढ़ा जा सकता था । इस बार दर्शनार्थियों की लाइन पहले के सभी रेकार्ड तोड़ते हुए आश्रम से लगभग २ कि.मी. दूर टोलनाका तक भाइयों की व उसके विपरीत दिशा में बहनों की २ कि.मी. लम्बी लाइन थी । लेकिन फिर भी किसीके चेहरे पर कोई फरियादात्मक चिह्न देखने को नहीं मिले । जिसे देखो वह श्रीगुरुगीता या श्रीआसारामायण का पाठ कर रहा है, कोई 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पढ़ने में मशगुल है । उसे पता ही नहीं कि लाइन में लगे उसे कितने घंटे व्यतीत हो गये । लाइन के बीच-बीच में कुछ साधक इकट्ठे होकर अपने अपने अनुभव सुना रहे थे तो दूसरे उनके अनुभवों से श्रद्धा-भक्ति की प्रेरणा पा रहे थे । २९ जुलाई की रात को १ बजे लाइन में लगने पर भी किसीको ३० जुलाई को दोपहर १२ बजे पूज्यश्री के दर्शन होते तो किसीको २ बजे दर्शन होते । बारह-बारह तेरह-तेरह घंटे लाइन में लगने पर भी भक्तों की सारी थकावट को पूज्य बापूजी के दर्शन व उनकी अमृतमयी वाणी दूर कर देती और उन्हें शीतलता प्रदान करती थी ।

सैकड़ों सेवाधारी भाई-बहन लाइन में खड़े इन साधकों-भक्तों को पानी पिलाने की सेवा में जुट गये थे । जिनको जो साधन मिले, वे उन्हींमें पानी भरके उनकी प्यास को तृप्त करके अपने अन्तःकरण में तृप्ति का अनुभव कर रहे थे क्योंकि उन्हें पता था कि वे भक्तजन राशन की लाइन में नहीं अपितु निजानंद की मस्ती में मस्त महापुरुष के दीदार के लिये लाइन में लगे हैं ।

श्रद्धा, प्रेम, भक्ति का जो नजारा आश्रम परिसर में देखा गया वह अद्भुत श्रद्धा जगानेवाला था । कोई आश्रम की मिट्टी को माथे पर लगा रहा था तो कोई आँखें बँद किये इन क्षणों को सदैव के लिये मानस-पटल पर अंकित कर लेना चाहता था ।

दिनांक : २९ जुलाई की शाम से चली गुरुपूनम दर्शनार्थियों की लाइन ३१ जुलाई शाम तक चली और अन्ततः ३१ जुलाई, शाम को पूज्य बापूजी ने शंखनाद करके गुरुपूर्णिमा महोत्सव की पूर्णाहुति की ।

गुरुपूर्णिमा दर्शनयात्रा के लिए स्पेश्यल ट्रेन

यह पहला अवसर है की साधकों की सुविधा के लिये श्री योग वेदान्त सेवा समिति, वापी ने मुंबई से अहमदाबाद तक के लिये गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर एक स्पेश्यल ट्रेन का आयोजन किया था । यह ट्रेन गुरुपूर्णिमा के दिन सुबह ६ बजे मुंबई से रवाना हुई । पूरी ट्रेन को अशोक के तोरणों से सजाया गया था । साथ ही यात्रा के समय सभी को सत्संग, भजन, कीर्तन का लाभ मिले इसके लिये प्रत्येक 'कोच' में स्पीकरों की व्यवस्था की गई थी । पूरी ट्रेन मानो एक चलते-फिरते आश्रम के रूप में परिणत हो गई थी ।

यह स्पेश्यल ट्रेन साधकों-भक्तों को लेकर साढ़े चार बजे साबरमती (अहमदाबाद) स्टेशन पहुँची, जहाँसे साधकों को लाने ले जाने में लगे वाहनों द्वारा साधकों को आश्रम तक पहुँचाया गया । सभी ने पूज्यश्री के दर्शन व सत्संगामृत से स्वयं को धन्य किया । साबरमती स्टेशन से रात को सवा ग्यारह बजे ट्रेन मुंबई के लिये रवाना हुई ।

❀

कृष्ण-जन्माष्टमी के पावन पर्व पर

पूज्यश्री का दिव्य संदेश

जीव स्वाभाविक ही विषय-विकारों एवं इन्द्रियों के भोगों में भटकता है क्योंकि जीव के ८४ लाख जन्मों के जो संस्कार हैं उन्हीं संस्कारों को लेकर जीव मनुष्य शरीर में आता है। खाना-पीना, सोना, भयभीत होना, बच्चों को जन्म देना, दुःख आये तो घबराना, सुख आये तो हर्षित होना और आखिर में मर जाना- ये पुराने काम करते-करते जीव आया है। मनुष्य शरीर में भी ये ही काम करते-करते वह खत्म न हो जाये इसीलिए भगवान का अवतार होता है।

जब समाज का शोषण करनेवाले आसुरी वृत्ति के शिकार बने हुए लोग, कंस जैसे लोग प्रजा का उत्पीड़न करके भी भोग भोगते-भोगते प्रजा को 'त्राहिमाम्' पुकारने के लिए बाध्य कर देते हैं, समाज में अव्यवस्था फैलने लगती है, सज्जन लोग पेट भरने में भी कठिनाइयों का सामना करते हैं और दुष्ट लोग शराब-कबाब उड़ाते हैं, कंस, चाणूर, मुष्टिक जैसे दुष्ट बढ़ जाते हैं और निर्दोष गोप-बाल जैसे अधिक सताये जाते हैं तब उन सताये जानेवालों की संकल्प शक्ति एवं भावना शक्ति उत्कट होती है और सतानेवालों के दुष्कर्मों का फल देने के लिए भगवान का अवतार होता है।

पृथ्वी आक्रान्त होकर श्रीहरि से अपने त्राण के लिए प्रार्थना करती है। जो पृथ्वी इन आँखों से दिखती है वह पृथ्वी का आधिभौतिक स्वरूप है लेकिन कभी-कभी पृथ्वी नारी या गाय का रूप लेकर आती है वह पृथ्वी का आधिदैविक स्वरूप है।

पृथ्वी से कहा गया : ''इतनी बड़ी-बड़ी इमारतें तुम्हारे ऊपर बन गयी हैं इससे तुम्हारे ऊपर कितना सारा बोझा बढ़ गया !'' तब पृथ्वी ने कहा : ''इन इमारतों का कोई बोझा नहीं लगता लेकिन जब साधु-संतों एवं भगवान को भूलकर, सत्कर्मों को भूलकर, सज्जनों को तंग करनेवाले विषय-विलासी लोग बढ़ जाते हैं तब मेरे ऊपर बोझा बढ़ जाता है।''

जब-जब पृथ्वी पर इस प्रकार का बोझा बढ़ जाता है तब-तब पृथ्वी अपना बोझा उतारने के लिए भगवान की शरण में जाती है। कंस आदि दुष्टों के पापकर्म बढ़ जाने पर भी पापकर्मों के भार से बोझीली पृथ्वी देवताओं के साथ भगवान के पास गई और उसने श्रीहरि से प्रार्थना की तब भगवान ने कहा :

''हे देवताओं ! पृथ्वी के साथ तुम भी आये हो, धरती के भार को हल्का करने की तुम्हारी भी इच्छा है, अतः जाओ, तुम भी वृंदावन में जाकर गोप-ग्वालों के रूप में अवतरित होकर मेरी लीला में सहयोगी बनो। मैं भी समय पाकर वसुदेव-देवकी के यहाँ अवतार लूँगा।''

वसुदेव-देवकी कोई साधारण मनुष्य नहीं थे। स्वायम्भुव मन्वन्तर में वसुदेव सुतपा नामके प्रजापति एवं देवकी उनकी पत्नी पृश्नि थीं। सृष्टि के विस्तार के लिए ब्रह्माजी की आज्ञा मिलने पर उन्होंने भगवान को पाने के लिए बड़ा तप किया था।

जीव में बहुत बढ़िया शक्ति छुपी है। **'जहाँ चाह, वहाँ राह।**

मनुष्य का जैसा दृढ़ निश्चय होता है और उस निश्चय को साकार करने में तत्परता से लगा रहता है तो वैसी ही परिस्थिति उसके इर्द-गिर्द प्रकट हो

जाती है । मनुष्य में इतनी शक्ति है कि वह कर्म के जगत में दृढ़ता से कर्म करके सारे विश्व को चकित कर सकता है । मनुष्य में इतना सामर्थ्य है कि वह उपासना करके मन चाहे भगवान और देवता का रूप प्रगट कर सकता है । वह योग करके चित्त की विश्रान्ति और अष्ट सिद्धियाँ पा सकता है और तत्त्वज्ञान पाकर, भगवान के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर जीवन्मुक्त भी हो सकता है ।

साधारण आदमी कर्मों के बन्धन से जन्म लेता है, सुख-दु:ख का भोग करता है और अंत में कर्मों के जाल में फँस मरता है लेकिन भगवान बंधन से अवतरित तो हो रहे हैं किन्तु कर्मबंधन से नहीं । वह बंधन है प्रेम-बंधन, प्रेमी भक्तों की पुकार का बंधन । भगवान करुणा करके अवतार लेते हैं, कर्मबंधन से नहीं । उनका जन्म दिव्य है ।

पृथ्वी ने कहा : "इन इमारतों का कोई बोझा नहीं लगता लेकिन जब साधु-संतों एवं भगवान को भूलकर, सत्कर्मों को भूलकर, सज्जनों को तंग करनेवाले विषय-विलासी लोग बढ़ जाते हैं तब मेरे ऊपर बोझ बढ़ जाता है ।"

जन्म कर्म च मे दिव्यं ।

साधारण जीव जब जन्म लेता है तो कर्मों के परिणामस्वरूप माता के रज-वीर्य के मिश्रण से जन्मता है लेकिन भगवान जब अवतार धारण करते हैं तो चतुर्भुजी रूप में दर्शन देते हैं, फिर माँ और पिता को तपस्याकाल में संतुष्ट करने के लिए जो वरदान दिया था उस वरदान के फलस्वरूप नन्हें-से हो जाते हैं ।

सुतपा प्रजापति एवं पृश्नि ने पूर्वकाल में वरदान में भगवान जैसा पुत्र माँगा था तब भगवान ने कहा था : ''मेरे जैसा और कोई पुत्र तो मैं तुम्हें दे नहीं सकता हूँ । मेरे जैसा तो मैं ही हूँ । तुम जैसा पुत्र माँगते हो वैसा मैं दे नहीं सकता अत: एक बार नहीं वरन् तीन बार मैं तुम्हारा पुत्र होकर आऊँगा ।''

जीव में बहुत बढ़िया शक्ति छुपी है । 'जहाँ चाह, वहाँ राह ।' मनुष्य का जैसा दृढ़ निश्चय होता है और उस निश्चय को पाने में तत्परता से लगा रहता है तो वैसी ही परिस्थिति उसके इर्द-गिर्द प्रकट हो जाती है ।

वे ही भगवान आदि नारायण सुतपा-पृश्नि के यहाँ 'पृश्निगर्भ' होकर, कश्यप-अदिति के यहाँ 'वामन' होकर एवं वसुदेव-देवकी के यहाँ भगवान श्रीकृष्ण होकर आये । भगवान के जन्म और कर्म दोनों ही दिव्य हैं क्योंकि उनके कर्म फलाकांक्षा से रहित होते हैं ।

साधारण आदमी जब कर्म करता है तो फल की इच्छा से एवं कर्त्ता होकर कर्म करता है जबकि भगवान के कर्म न तो फलासक्ति से ही होते हैं और न ही कर्त्ताभाव से ।

अकर्तृत्वं अभोक्तृत्वं
स्वात्मनो मन्यते यदा ।

अष्टावक्रजी कहते हैं कि जब जीव अपने को अकर्त्ता-अभोक्ता मानता है तब उसके मन के दोष अपने-आप दूर होने लगते हैं और उसके कर्म भी दिव्य होने लगते हैं । हकीकत में जीव का वास्तविक स्वरूप अकर्त्ता-अभोक्ता ही है । कर्त्तापना तो प्रकृति की चीजों में होता है और प्रकृति की चीजों से जुड़कर जीव अहं के साथ तादात्म्य कर लेता है । शरीर, मन, बुद्धि, ये सब प्रकृति की चीजें हैं लेकिन जब अविद्या के कारण जीव प्रकृति की इन चीजों में **ममता** कर लेता है तभी उसे अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश- इन पाँच क्लेशों में गिरना पड़ता है ।

भगवान के अवतार के तीन मुख्य प्रयोजन हैं :

(१) **परित्राणाय साधूनां :** साधु-स्वभाव के लोगों का, आत्मसुख में रमण करनेवाले लोगों का रक्षण करना ।

(२) **विनाशाय च दुष्कृताम् :** जब समाज में बहुत स्वार्थी, तामसी, आसुरी प्रकृति के कुप्रचारक एवं शोषक लोग बढ़ जाते हैं तब उनकी लगाम खींचना ।

(३) **धर्मसंस्थापनार्थाय :** धर्म की स्थापना करने के लिए अर्थात् अपने स्वजनों को, अपने भक्तों को एवं अपनी ओर आनेवालों को अपने स्वरूप का साक्षात्कार हो सके इसका मार्गदर्शन करना ।

भगवान के अवतार के समय तो लोग लाभान्वित

होते ही हैं किन्तु भगवान का दिव्य विग्रह जब अन्तर्धान हो जाता है उसके बाद भी भगवान के गुण, कर्म एवं लीलाओं का स्मरण करते-करते हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी मानव समाज फायदा उठाता रहता है ।

ऐसे भगवान के स्वभाव को जिसने एक बार भी जान लिया फिर वह भगवान को प्रेम किये बिना रह ही नहीं सकता । शिवजी ने कहा है :

उमा राम सुभाऊ जेहि जाना ।
ताहि भजन तजि भाव न आना ॥

'हे उमा ! जिसने भगवान के स्वभाव को जान लिया उसे भगवान का भजन किये बिना चैन ही नहीं पड़ता है ।'

जब जीव अपने को अकर्त्ता-अभोक्ता मानता है तब उसके मन के दोष अपने-आप दूर होने लगते हैं और उसके कर्म भी दिव्य होने लगते हैं ।

जैसे दुष्ट के स्वभाव को जानने पर उसे दण्ड दिये बिना न्यायाधीश का मन नहीं मानेगा उसी प्रकार भगवान के स्वभाव को जान लेने पर उन्हें प्यार किये बिना भक्त का मन नहीं मानेगा । जो जिसको प्रेम करता है उसका स्वभाव उसमें अवतरित हो जाता है । अत: संत भगवंत से प्रेम करें ताकि उनका स्वभाव हममें भी आ जाये ।

जैसे कीचड़ में गिरे व्यक्ति को निकालने के लिए निकालनेवाले को स्वयं भी कीचड़ में जाना पड़ता है वैसे ही अंधकार में उलझे लोगों को प्रकाश में लाने के लिए भगवान ने भी अंधकार में अवतार ले लिया ।

भगवान कहते हैं :

जन्म कर्म च मे दिव्यं
एवं यो वेत्ति तत्त्वत: ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म
नैति मामेति सोऽर्जुन ॥

'हे अर्जुन ! मेरा जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् अलौकिक है, इस प्रकार जो पुरुष तत्त्व से जानता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को नहीं प्राप्त होता है किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है ।'

(श्रीमद्भगवद्गीता : ४.९)

श्रीरामचरितमानस में भी आता है :

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के लिए भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया है, अपनी इच्छा से तन धारण किया है । वे अज्ञानमयी माया और उसके गुण तथा इन्द्रियों से परे हैं । उनका दिव्य शरीर अपनी इच्छा से ही बना है, किसी कर्मबंधन से परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं ।

(श्रीरामचरित० बालकाण्ड : १९२)

जीव तो कर्म के बंधन से अवतार लेता है जबकि भगवान अपनी इच्छा से आते हैं । जैसे, कोई उद्योगपति सेठ अपनी इच्छा से अपनी फैक्टरी में सैर करने जाये, मजदूर को काम बताने के लिए खुद भी थोड़ी देर काम करने लग जाये तो इससे सेठ का सेठपना चला नहीं जाता । ऐसे ही जीवों को मुक्ति का मार्ग बताने के लिए भगवान इस जगत में आ जायें तो भगवान का भगवानपना चला नहीं जाता ।

भगवान श्रीकृष्ण ने सात तिथि आगे की और सात तिथि पीछे की छोड़कर, बीच की अष्टमी तिथि को पसंद किया, वह भी सावन महीने के रोहिणी नक्षत्र में, कृष्ण पक्ष की अष्टमी । (हिन्दी महीनों के अनुसार भादों कृष्ण अष्टमी). शोषकों ने समाज में अंधेरा मचा रखा था और समाज के लोग भी उस अंधकार से भयभीत थे, अविद्या में उलझे हुए थे । अत: जैसे कीचड़ में गिरे व्यक्ति को निकालने के लिए निकालनेवाले को स्वयं भी कीचड़ में जाना पड़ता है वैसे ही अंधकार में उलझे लोगों को प्रकाश में लाने के लिए भगवान ने भी अंधकार में अवतार ले लिया ।

भगवान के जन्म एवं कर्म तो दिव्य हैं ही लेकिन उनकी प्रेम शक्ति, माधुर्य शक्ति एवं आह्लादिनी शक्ति भी दिव्य है । जिसने एक बार भी भगवान के माधुर्य का अनुभव किया या सुना तो वह भगवान का ही हो जाता है । तभी तो किसी मुसलमान कवि ने गाया कि : 'उस नंदनंदन, यशोदानंदन की गली में मत

जाना । वहाँ तो दिल ही लूट लिया जाता है...'

समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी श्रीकृष्ण यशोदा द्वारा बाँधने पर ओखली से बंध भी जाते हैं । यह उनकी माधुर्य शक्ति है । जो जीवों का बंधन छुड़ाने आये हैं वे माधुर्य शक्ति को स्वीकार करके स्वयं बंध जाते हैं । जो लोगों को पाशविक वृत्तियों से छुड़ाने आये हैं वे ग्वाल-बालों के साथ खेलते-खेलते हार भी जाते हैं और घोड़ा बनकर उनको अपने कँधे पर भी बैठा लेते हैं । कैसे होंगे वे नटखट नागर !

कृष्ण कन्हैया लाल की जय...

भगवान के कर्म एवं लीलाएँ दुःख निवृत्त करनेवाली तथा सुख प्रदान करनेवाली हैं । भगवान की लीलाएँ कर्त्तापन मिटानेवाली हैं । भगवान का ज्ञान अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को मिटानेवाला है । ऐसे भगवान का जन्मोत्सव हम हर साल मनाते हैं । वास्तव में अजन्मा का तो कोई जन्म नहीं, लेकिन हम जन्म-मरण के चक्र में चक्कर काटनेवालों के लिए ही वह अजन्मा प्रभु जन्म को स्वीकार करके हमें भी प्रेम के द्वारा, ज्ञान के द्वारा, आह्लादिनी शक्ति के द्वारा अजन्मा तत्त्व में जगाते हैं ।

जैसे, कोई सेठ फैक्टरी बनाये और उसे लावारिस छोड़ दे, उसे कभी देखने ही न जाये तो वह सेठ कैसा ? वह सेठ फैक्टरी को देखने आये, कहीं गड़बड़ हो तो उसे ठीक करे तभी तो वह उस फैक्टरी का स्वामी हो सकता है । ऐसे ही भगवान दुनिया बनाकर छोड़ दें और कभी दुनिया में आयें ही नहीं, सातवें आसमान में ही रहें तो वे भगवान कैसे ? बनायी हुई सृष्टि में वे बार-बार आते हैं और सृष्टि की गड़बड़ियाँ ठीक करते हैं फिर भी ठीक-ठाक करने का उन्हें अहं नहीं होता है तभी तो वे प्रेमावतार श्रीकृष्ण कहलाते हैं...

उस आत्मा के साथ, कृष्ण तत्त्व के साथ आपका सनातन संबंध है ।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

'इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है ।'

सृष्टि नहीं थी तब भी आप हम थे, शरीर नहीं था तब भी आप हम थे, शरीर है तब भी हमारा-आपका चैतन्य स्वरूप है और शरीर नहीं रहेगा तब भी हम आप रहेंगे ।

ऐसे ही सृष्टि के आदि-अंत-मध्य तीनों में भगवान रहते हैं । सृष्टि का प्रलय हो जाये फिर भी भगवान रहते हैं । ऐसे भगवान को अपना आत्मा मानकर जो प्रेम करता है, ऐसे भगवान को अपना तारणहार मानकर जो उनकी आज्ञा का पालन करता है और ऐसे भगवान के गुण, कर्म और लीलाओं का जो चिंतन करता है उसके तन, मन पवित्र हो जाते हैं और बुद्धि समता के साम्राज्य में प्रवेश पा लेती है ।

भगवान कहते हैं : ''जो मेरे जन्म और कर्म को तत्त्व से जानता है वह मुक्त हो जाता है ।''

भगवान के कर्म एवं जन्म को जो तत्त्व से जान लेता है उस मनुष्य के कर्म भी दिव्य होने लगते हैं । वास्तव में कर्म का कर्त्ता जीव है । कर्म अनित्य है और कर्म का फल भी अनित्य है लेकिन कर्म का कर्त्ता जीव नित्य है । जीव भी नित्य है और जीव का चैतन्य आत्मा, ईश्वर भी नित्य है । अपने ऐसे नित्य स्वभाव का सतत स्मरण करो ।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

भगवान को अपना आत्मा मानकर जो प्रेम करता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है उसके तन, मन पवित्र हो जाते हैं और बुद्धि समता के साम्राज्य में प्रवेश पा लेती है ।

आलसी, प्रमादी होकर कर्मों को छोड़ देते हैं उनका विनाश हो जाता है । कर्मों का फल ऐहिक वस्तुएँ चाहते हैं, उनके कर्म भी उनको बाँधनेवाले हो जाते हैं लेकिन जो कर्म का फल दिव्य चाहता है वह अपने कर्मों को सत्संग एवं सत्कर्म द्वारा दिव्य बना लेता है वह परम दिव्य परमात्मा के आनंद को पाने में सफल हो जाता है ।

श्राद्ध

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

दिनांक : २७-९-९६ से श्राद्धपक्ष का आरंभ हो रहा है। जो श्रद्धा से दिया जाये, उसे श्राद्ध कहते हैं। श्रद्धा और मंत्र के मेल से जो क्रिया होती है, उसे श्राद्ध कहते हैं। जिनके प्रति हम कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धा व्यक्त करते हैं वे भी हमारी सहायता करते हैं।

नित्य श्राद्ध, नैमित्तिक श्राद्ध, काम्य श्राद्ध, एकोदिष्ट श्राद्ध, गोष्ठ श्राद्ध आदि श्राद्ध के अनेक प्रकार हैं।

नित्य श्राद्ध : यह श्राद्ध जल द्वारा, अन्न द्वारा प्रतिदिन होता है। श्रद्धा-विश्वास से देवपूजन, माता-पिता एवं गुरुजनों के पूजन को नित्य श्राद्ध कहते हैं। अन्न के अभाव में जल से भी श्राद्ध किया जाता है।

काम्य श्राद्ध : जो श्राद्ध कामना रखकर किया जाता है, उसे काम्य श्राद्ध कहते हैं।

वृद्ध श्राद्ध : विवाह, उत्सव आदि अवसर पर वृद्धों के आशीर्वाद लेने हेतु किया जानेवाला श्राद्ध वृद्ध श्राद्ध कहलता है।

संपिंडित श्राद्ध : संपिंडित श्राद्ध सन्मान हेतु किया जाता है।

पार्व श्राद्ध : मंत्रों से पर्वों पर किया जानेवाला श्राद्ध पार्व श्राद्ध है। जैसे अमावस्या आदि पर्वों पर किया जानेवाला श्राद्ध।

गोष्ठ श्राद्ध : गौशाला में किया जानेवाला श्राद्ध गोष्ठ श्राद्ध कहलाता है।

शुद्धि श्राद्ध : पापनाश करके अपने को शुद्ध कराने के लिए जो श्राद्ध किया जाता है वह है शुद्धि श्राद्ध।

दैविक श्राद्ध : देवताओं की प्रसन्नता के उद्देश्य से दैविक श्राद्ध किया जाता है।

कर्मांग श्राद्ध : गर्भाधान, सोमयाग, सीमन्तोन्नयन आदि जो आनेवाली संतति के लिए किया जाता है, उसे कर्मांग श्राद्ध कहते हैं।

तुष्टि श्राद्ध : देशान्तर में जानेवाले की तुष्टि के लिए जो शुभकामना की जाती है, उसके लिए जो दान-पुण्य आदि किया जाता है उसे तुष्टि श्राद्ध कहते हैं। अपने मित्र, बहन-भाई, पति-पत्नी आदि की भलाई के लिए जो कर्म किये जाते हैं उन सबको तुष्टि श्राद्ध कहते हैं।

क्षयाः यां सान्त्वश्रिक श्राद्ध : बारह महीने होने पर श्राद्ध के दिनों में जो विधि की जाती है, उसे **क्षयाः यां सान्त्वश्रिक श्राद्ध** कहते हैं।

ऊँचे में ऊँचा, सबसे बढ़िया श्राद्ध इन श्राद्धपक्ष की तिथियों में होता है। हमारे पूर्वज जिस तिथि में इस संसार से गये हैं उसी तिथि के दिन इस श्राद्ध पक्ष में किया जानेवाला श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ होता है।

हमारे जो संबंधी देव हो गये हैं, जिनको दूसरा शरीर नहीं मिला है वे पितृलोक में अथवा इधर-उधर विचरण करते हैं, उनके लिए पिण्डदान किया जाता है। बच्चों एवं संन्यासियों के लिए पिण्डदान नहीं किया जाता। पिण्डदान उन्हीं का होता है जिनको 'मैं-मेरे' की आसक्ति है। बच्चों की 'मैं-मेरे' की स्मृति और आसक्ति विकसित नहीं होती और संन्यास ले लेने पर संन्यासी को शरीर को 'मैं' मानने की स्मृति हटा देनी होती है। शरीर में उनकी आसक्ति नहीं होती इसलिए उनके लिए पिण्डदान नहीं किया जाता।

श्राद्ध में बाह्य रूप से जो चावल का पिण्ड बनाया जाता है केवल उतना बाह्य कर्मकाण्ड ही नहीं है वरन् पिण्डदान के पीछे तात्त्विक ज्ञान भी छुपा है। जो शरीर में नहीं रहे हैं, पिण्ड में हैं, उनका नौ तत्त्वों का पिण्ड रहता है : चार अन्तःकरण और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ। उनका स्थूल पिण्ड नहीं रहता है वरन् वायुमय पिण्ड रहता है। वे अपनी आकृति दिखा सकते हैं किन्तु आप उन्हें छू नहीं सकते। दूर से ही वे आपकी दी हुई चीज को भावनात्मक रूप से ग्रहण करते हैं। दूर से ही वे आपको प्रेरणा आदि देते हैं अथवा कोई-कोई स्वप्न में भी मार्गदर्शन देते हैं।

अगर पितरों के लिए किया गया पिण्डदान एवं श्राद्धकर्म व्यर्थ होता तो वे मृतक पितर स्वप्न में यह नहीं कहते कि : 'हम दुःखी हैं। हमारे लिए पिण्डदान करो ताकि हमारी पिण्ड की आसक्ति छूटे और हमारी आगे की यात्रा हो, हमें दूसरा शरीर, दूसरा पिण्ड मिल सके।' श्राद्ध इसीलिए किया जाता है कि पितर मंत्र एवं श्रद्धापूर्वक किये गये श्राद्ध की वस्तुओं को भावनात्मक रूप से लेते हैं और वे तृप्त होकर हमें सहायता भी करते हैं।

जीवात्मा का अगला जीवन पिछले संस्कारों से बनता

है । अत: श्राद्ध करके यह भावना की जाती है कि उनका अगला जीवन अच्छा हो । वे भी हमारे वर्तमान जीवन की अड़चनों को दूर करने की प्रेरणा देते हैं और हमारी भलाई करते हैं ।

Every action creates reaction.

आप जिससे भी बात करते हैं उससे यदि आप प्रेम से, नम्रता से और उसके हित की बात करते हैं तो वह भी आपके साथ प्रेम से और आपके हित की ही बात करेगा । यदि आप सामनेवाले से काम करवाकर फिर उसकी ओर देखते तक नहीं तो वह भी आपकी ओर नहीं देखेगा या आपसे रुष्ट हो जायेगा । किसीके घर में ऐरे-गैरे या लूले-लंगड़े या माँ-बाप को दु:ख देनेवाले बेटे पैदा होते हैं तो उसका कारण भी यही बताया जाता है कि जिन्होंने पितरों को तृप्त नहीं किया, पितरों का पूजन नहीं किया, अपने माँ-बाप को तृप्त नहीं किया उनके बच्चे भी उनको तृप्त करनेवाले नहीं होते ।

यह संसार की नीति है कि 'जैसा किया जाता है, वैसा ही मिलता है ।' हम यदि हमारे पितरों के लिए अच्छा करते हैं तो वे भी हमारे लिए अच्छा सोचते हैं और अच्छा मार्गदर्शन भी देते हैं ।

अरविन्द घोष जब जेल में थे तब उन्होंने लिखा : ''मुझे विवेकानंद की आत्मा द्वारा प्रेरणा मिलती थी और मैं १५ दिन तक महसूस करता था कि स्वामी विवेकानंद की आत्मा मुझे सूक्ष्म जगत की साधना का मार्गदर्शन देती है ।'' जब उन्होंने परलोकगमनवालों की साधना की तब उन्होंने महसूस किया कि रामकृष्ण का अंतवाहक शरीर (उनकी आत्मा) भी उन्हें सहयोग देता था ।

अब यहाँ एक संदेह हो सकता है कि श्री रामकृष्ण परमहंस को तो परमात्मतत्त्व का साक्षात्कार हो गया, वे तो मुक्त हो गये । वे अभी पितर लोक में तो नहीं होंगे फिर उनके द्वारा प्रेरणा कैसे मिली ? श्रीयोगवाशिष्ठ महारामायण में वशिष्ठजी महाराज कहते हैं :

''ज्ञानी जब शरीर में होता है तो जीवन्मुक्त होता है और जब शरीर छूटता है तो विदेहमुक्त होता है । फिर वह ज्ञानी व्यापक ब्रह्म हो जाता है । वह सूर्य होकर तपता है, चंद्रमा होकर चमकता है, ब्रह्माजी होकर सृष्टि उत्पन्न करता है, विष्णु होकर सृष्टि का पालन करता है और शिव होकर संहार करता है ।''

जब सूर्य एवं चंद्रमा में ज्ञानी व्याप जाते हैं तो अपने रास्ते जानेवाले को वे प्रेरणा दे दें यह उनके लिए असंभव नहीं है ।

मेरे गुरुदेव तो व्यापक ब्रह्म हो गये लेकिन मैं अपने गुरुदेव से जब भी बात करना चाहता हूँ तो हो जाती है और जो प्रेरणा लेना चाहता हूँ तो देर नहीं लगती । अथवा तो ऐसा कह सकते हैं कि अपना शुद्ध संवित् ही गुरुरूप में, पितृरूप में प्रेरणा दे देता है ।

कुछ भी हो, श्रद्धा से किये हुए पिण्डदान आदि कर्त्ता को मदद करते हैं । श्राद्ध का एक विशेष फायदा यह है कि 'मरने के बाद भी जीव का अस्तित्व रहता है' इस बात की स्मृति बनी रहती है । दूसरा लाभ यह है कि इसमें अपनी संपत्ति का सामाजिकरण होता है । गरीब गुरबे, कुटुम्बियों आदि को भोजन मिलता है । दूसरे भोजन-समारोहों में रजो-तमोगुण होता है लेकिन श्राद्ध हेतु दिया गया भोजन धार्मिक भावना को बढ़ाता है और परलोक संबंधी ज्ञान और भक्तिभाव विकसित होता है । भगवान श्रीराम ने भी अपने पिता दशरथ का श्राद्ध किया था और ब्रह्मज्ञानी महापुरुष एकनाथजी महाराज भी अपने पिता का श्राद्ध करते थे ।

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय के ४२ वें श्लोक में आया है :

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रिया: ॥

'वर्णसंकर कुलघातियों को और कुल को नरक में ले जानेवाला ही होता है । श्राद्ध और तर्पण न मिलने से इन (कुलघातियों) के पितर भी अधोगति को प्राप्त होते हैं ।'

वर्णसंकर : एक जाति के पिता एवं दूसरी जाति की माता से उत्पन्न संतान को वर्णसंकर कहते हैं ।

महाभारत के अनुशासन पर्व के अन्तर्गत दानधर्म पर्व में आता है :

अर्थाल्लोभाद् वा कामाद् वा वर्णानां चाप्यनिश्चयात् ।
अज्ञानाद् वापि वर्णानां जायते वर्णसंकर: ॥
तेषामेतेन विधिना जातानां वर्णसंकरे ।

'धन पाकर या धन के लोभ में आकर अथवा कामना के वशीभूत होकर जब उच्च वर्ण की स्त्री नीच वर्ण के पुरुष के साथ संबंध स्थापित कर लेती है, तब वर्णसंकर संतान उत्पन्न होती है । वर्ण का निश्चय अथवा ज्ञान न होने से भी वर्णसंकर की उत्पत्ति होती है ।'

(महाभारत : दानधर्म पर्व : ४८.१,२)

वर्णसंकर के हाथ का दिया पिण्डदान और श्राद्ध

पितर नहीं स्वीकार करते और वर्णसंकर संतान से पितर तृप्त नहीं होते वरन् दुःखी और अशान्त होते हैं । अतः उनके कुल में भी दुःख, अशान्ति और तनाव बना रहता है ।

श्राद्ध काल में शरीर द्रव्य, स्त्री, भूमि, मन, मंत्र और ब्राह्मण ये सात चीजें विशेष शुद्ध होनी चाहिए । श्राद्ध में तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए । शुद्धि, अक्रोध और अत्वरा (जल्दबाजी नहीं) ।

श्राद्ध में कृषि और वाणिज्य का धन उत्तम, उपकार के बदले दिया गया धन मध्यम और व्याज, सूद एवं छल-कपट से कमाया गया धन अधम माना जाता है । उत्तम धन से देवता और पितरों की तृप्ति होती है, वे प्रसन्न होते हैं । मध्यम धन से मध्यम प्रसन्नता होती है और अधम धन से छोटी योनि (चाण्डाल योनि) में जो अपने पितर हैं उनको तृप्ति मिलती है । श्राद्ध में जो अन्न इधर-उधर छोड़ा जाता है उससे पशु योनि एवं इतर योनि में भटकते हुए हमारे कुल के लोगों को तृप्ति मिलती है, ऐसा कहा गया है ।

श्राद्ध में मंत्र का बड़ा महत्त्व है । श्राद्ध में आपके द्वारा दी गई, वस्तु कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, लेकिन आपके द्वारा यदि उच्चारण ठीक न हो तो काम अस्त-व्यस्त हो जाता है । मंत्रोच्चारण शुद्ध होना चाहिए और जिसके निमित्त श्राद्ध करते हों उसके नाम का उच्चारण शुद्ध करना चाहिए ।

मान लो, हमारे पिता चल बसे हैं और हमें तिथि का पता नहीं है तो भूली हुई तिथिवालों का श्राद्ध अमावस्या के दिन करना चाहिए । हमारी अमावस्या पितरों का दोपहर का समय होता है । दोपहर को सभी को भूख लगती है । अपने सत्कर्मों से अपना अंतःकरण पवित्र होता है और अपने संबंधियों की उन्नति होती है ।

हिन्दूओं में जब पत्नी संसार से जाती है तो पति को हाथ जोड़कर कहती है : ''मेरे से कुछ अपराध हो गया हो तो क्षमा करना, मेरी सद्गति के लिए आप प्रार्थना करना ।'' पति भी बदले में हाथ जोड़ते हुए कहता है : ''जाने अनजाने तेरे साथ मैंने कभी कठोर व्यवहार किया हो तो तू भी मुझे क्षमा कर देना और मेरी सद्गति के लिए प्रार्थना करना ।''

हम एक-दूसरे की सद्गति के लिए जीते-जी भी सोचते हैं और मरते समय भी सोचते हैं, मरने के बाद भी सोचते हैं ।

औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को कैद कर दिया था और पीने के लिए नपा-तुला पानी एक फूटी हुई मटकी में भेजता था । तब शाहजहाँ ने अपने बेटे को लिख भेजा :

''धन्य हैं वे हिन्दू जो अपने मृतक माता-पिता को भी खीर और हलुए-पूरी से तृप्त करते हैं और तू जिन्दे बाप को एक पानी की मटकी तक नहीं दे सकता ? तुमसे तो वे हिन्दू अच्छे, जो मृतक माता-पिता की भी सेवा कर लेते हैं ।''

भारतीय संस्कृति अपने माता-पिता या कुटुम्ब-परिवार का ही हित नहीं, अपने समाज या देश का ही हित नहीं वरन् पूरे विश्व का हित चाहती है ।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

श्राद्ध के आरम्भ में व अन्त में इस मंत्र का तीन बार जप करें । पिण्डदान करते समय एकाग्रचित्त होकर इसका जप करना चाहिये । इससे पितर शीघ्र ही आ जाते हैं और राक्षस भाग खड़े होते हैं । तीनों लोकों के पितृ तृप्त होते हैं । यह मंत्र पितरों को तारनेवाला है ।

दान देते समय काले तिल, जौ और कुशा एवं हाथ में पानी ले कर ब्राह्मण को दान देना चाहिए ताकि उसका शुभ फल पितरों तक पहुँच सके नहीं तो असुर लोग हिस्सा ले जाते हैं ।

ब्राह्मण के हाथ में अक्षत (चावल) देकर यह मंत्र बुलवाया-बोला जाता है :

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं शान्ति पुष्टिर्धृतिश्च मे ।
यदिच्छ्रेयस् कर्मलोके तदस्तु सदा मम ॥

'मेरा पुण्य अक्षय हो, मुझे शांति, पुष्टि और धृति प्राप्त हो, लोक में जो कल्याणकारी वस्तुएँ हैं वे सदा मुझे मिलती रहें ।'

इस प्रकार की प्रार्थना भी की जाती है ।

पितरों को श्रद्धा से ही बुलाया जा सकता है । केवल कर्मकाण्ड या वस्तुओं से काम नहीं होता है ।

श्राद्ध की विधि है श्रद्धा और शुद्ध मंत्रोच्चारण । उनका नाम, उनके पिता का नाम उनके कुलगोत्र का नाम और श्रद्धा से उनका आवाहन ।

पितरों को जो श्रद्धामय प्रसाद मिलता है उससे वे तृप्त होते हैं और अपने कुटुम्बियों को मदद भी करते हैं ।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर
इन्द्र द्वारा सतत १०८ घण्टे अभिषेक

['दैनिक् प्रसारण' (म.प्र.) के प्रतिनिधि नीलेश सोनी 'लोहित' के द्वारा]

आज तक तो सिर्फ पढ़ा-सुना ही था कि : ''आत्मारामी संतों के हुक्म से सूर्य प्रकाशता है। उन्हीं के लिये पवनदूत गमनागमन करता है। उन्हीं के आगे समुद्र रेत में अपना सिर रगड़ता है। प्रकृति सदैव उनकी सेवा करने को आतुर रहती है। देवता भी उनकी चरणरज पाकर अपना भाग्य बनाते हैं। यही नहीं बल्कि उनकी आज्ञा से ही इन्द्र पानी बरसाता है।''

इस वर्षा ऋतु में इन वचनों को प्रत्यक्ष रूप में साकार होते देखने का दुर्लभ अवसर मिला। भगवान और भगवत्तत्त्व को उपलब्ध हुए ब्रह्मवेत्ता के चरणकमल जहाँ-जहाँ पड़ते हैं, वहाँ-वहाँ प्रकृति वैभव, आनंद, खुशियाँ और सुख स्वत: ही उड़ेल देती है।

इस वर्ष मध्य प्रदेश में मालवा समेत कई भागों में वर्षा समय पर नहीं आने से और इस विलम्ब से होनेवाली संभावित लाखों-करोड़ों की तबाही को लेकर सर्वत्र भारी चिन्ता व्याप्त थी। धरती तप-तपकर कटे जा रही थी। कृषक बारिश की बाट जो रहे थे। व्यापारियों को व्यापार ठप्प होने की चिन्ता खाए जा रही थी तो गरीब महँगाई का बोझ और ज्यादा उठाने की पीड़ा से मानो अभी से कराह रहा था। इन्द्र देखता की बेरूखी से सभी व्यथित थे।

मगर जहाँ आत्मानंद की मस्ती में रहनेवाले संत हों, वहाँ भला दु:ख, चिन्ता और निराशा कितने समय तक डेरा डाले रह सकती हैं ? इन्द्र देवता कहाँ तक किसे सता सकते हैं ?

ज्यों ही बापूजी के पावन चरण गुजरात के बाहर पड़े, त्यों ही पहले राजस्थान और फिर समूचे मध्य प्रदेश में ऐसा पानी बरसा... ऐसा पानी बरसा... ऐसे इन्द्र देवता चाकरी में खड़े हो गये कि जहाँ देखो, जहाँ के बारे में सुनो, वहाँ बस पानी ही पानी। क्षेत्रीय अखबार, पत्रिकाएँ, आकाशवाणी और दूरदर्शन सिर्फ पानी ही पानी का समाचार दे रहे थे। मध्य प्रदेश में ऐसी बारिश हुई कि सभी प्रमुख नदियाँ, नाले और तालाब उफान पर आ गये। इन दिनों में बापूजी का निवास थोड़े समय पंचेड़ आश्रम पर रहा और जब बापूजी यहाँ से उज्जैन होकर इन्दौर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव के लिये पधारे, तब तक तो पार्वतीजी का मायका कहे जानेवाले 'मालवा' में पूज्यश्री को पाकर मानो इन्द्र देवता अपनी सुध-बुध ही खो बैठे।

प्रदेश के सारे अखबार, पत्रिकाएँ और दूरदर्शन इस बात के प्रत्यक्ष गवाह हैं कि जिस प्रदेश में जहाँ चार-पाँच दिन पूर्व अवर्षा की वजह से सर्वत्र भारी निराशा की बदरियाँ मँडरा रही थीं वहीं से अब अतिवर्षा के कारण उत्पन्न हुई अव्यवस्था के समाचार आ रहे थे। इतना पानी कहाँ से और कैसे बरसा यह अपने आप में आज तक पर्यावरणविदों के लिये अनसुलझी पहेली ही है क्योंकि प्रदेश की प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थितियाँ अतिवर्षा का कहीं से भी कोई संकेत नहीं देती थी !

कितनी अवर्णनीय होती है ब्रह्मवेत्ताओं की उपस्थिति ! उनकी हाजरी मात्र से मिनटों में दु:ख, चिन्ता व निराशा की जगह खुशी की लहर दौड़ पड़ती है और स्वयं इन्द्र भी आपा खोकर अपने पवित्र जल से उनके श्रीचरणों का अभिषेक करने को, दर्शन को आये भक्तों का अभिनंदन करने को व्याकुल रहते है।

यद्यपि इन्दौरवासी पूज्यश्री के सान्निध्य में भीतर से सत्संग-गंगा में और बाहर से पानी की वर्षा में नहाकर परम शीतल हो रहे थे तो दूसरी ओर समूचा प्रदेश पूरे १०८ घण्टे तक चली अनवरत वर्षा में नहाकर गुरुपूर्णिमा महोत्सव सौल्लास मना रहा था।

❀

युवानों के लिए सफलता की कुँजी

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

या मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तथा मामद्य मेधया अग्ने मेधाविनं कुरु ॥

(यजु० : ३२.१४)

इस वेद मंत्र में प्रभु से मेधा-बुद्धि की याचना की गयी है । बुद्धि को विकसित करने में विद्या का बड़ा हाथ है । अत: उपयोगी व आन्तरिक शक्तियों का विकास करनेवाली विद्या से सम्पन्न होकर बच्चों व युवानों को अपने अन्दर सुप्त पड़ी मेधा को जागृत करना चाहिये । वेद में ही अन्य स्थान पर आता है कि जब मेधा जागृत हो जाती है तब वाणी का कोई भी विषय, कोई भी विभाग आँख से ओझल नहीं रह सकता ।

संसार के माने हुए वैज्ञानिक आइन्स्टीन बचपन में पढ़ने, लिखने व प्रत्येक कार्य करने में बहुत ही पीछे थे । उनके साथ पढ़नेवाले लड़के हमेशा उनका मजाक उड़ाया करते थे । एक दिन आइन्स्टीन ने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक विनम्र वाणी में अपने अध्यापक महोदय से पूछा :

''क्या मैं किसी प्रकार सुयोग्य बन सकता हूँ ?''

तब अध्यापक ने उन्हें संयम व सदाचार की शिक्षा देते हुए कहा : ''तत्परता व एकाग्रता से ही जीवन में महान् बना जा सकता है ।''

आइन्स्टीन ने उनकी इस बात को अपने जीवन में उतारा और परिणामत: वे संसार में अणु विज्ञान के पारंगत और सापेक्षवाद के जनक माने गये । उनकी वह बुद्धू कहलानेवाली पुरानी बुद्धि संयम, सदाचार, तत्परता व एकाग्रता के कारण हजार गुनी विकसित हो गई ।

शास्त्रों में आता है :

तपःसु सर्वेषु एकाग्रता परं तपः ।

'सब तपों में एकाग्रता परम तप है ।'

यदि जीवन को सफल बनाने का कोई मुख्य साधन है तो वह है एकाग्रचित्त होना और यदि जीवन की असफलता का कोई कारण है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना । चित्त की अस्थिरता कैसी भी हो, हानिकारक ही होती है ।

सफल और असफल मनुष्य में क्या अन्तर है ? क्या यही कि एक ने कम काम किया और एक ने ज्यादा किया ? नहीं । अधिक सफल व्यक्ति ने अपना काम बुद्धिमत्ता एवं एकाग्रता से किया । उसने स्वयं को अपने कार्य में तल्लीन कर दिया । कहावत भी है :

करत-करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात है सिल पर परत निशान ॥

द्रोणाचार्य पांडवों और कौरवों के गुरु थे । वे उनको धनुर्विद्या की शिक्षा दिया करते थे । एक दिन उन्होंने सभी शिष्यों को परीक्षा के लिये बुलाया ।

उन्होंने पेड़ पर पहले से ही लटकी बनावटी चिड़िया की आँख को निशाना साधने को कहा ।

सर्व प्रथम चिड़िया की आँख को निशाना साधते हुए युधिष्ठिर से उन्होंने पूछा : ''तुम्हें निशाना लगाते हुए और क्या-क्या वस्तुएँ दिखाई दे रही हैं ?''

युधिष्ठिर : ''गुरुजी ! मुझे आसपास के सभी वृक्ष, शाखाएँ आदि दिखाई दे रहे हैं ।''

इसी प्रकार द्रोणाचार्य ने क्रमश: सभी से पूछा कि तुम्हें निशाना लगाते हुए और कौन-कौन-सी वस्तुएँ दिखाई दे रही हैं ?

किसीने कहा कि आकाश, वृक्ष और चिड़िया दिखाई पड़ रही है । किसीने कुछ बताया किसीने कुछ । गुरु द्रोण ने बिना निशाना लगाये ही सबको बिठा दिया । जब अर्जुन की बारी आयी तो उससे भी वही प्रश्न किया । तब अर्जुन ने गुरुजी के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा :

''मुझे तो इस समय केवल चिड़िया की आँख ही दिखाई दे रही है और आसपास कोई वस्तु दिखाई नहीं दे रही ।'' तब गुरु द्रोण ने अर्जुन को शाबाशी देते हुए कहा : ''अर्जुन ! लगाओ निशाना । तुम परीक्षा में पूर्णरूप से उत्तीर्ण होगे ।''

जीवन में यदि उन्नति व प्रगति के पथ पर अग्रसर होना हो तो आलस्य, प्रमाद, भोग, दुर्व्यसन, दुर्गुण और दुराचार को विष के समान समझकर उनको त्याग दो एवं सद्गुण, सदाचार का सेवन, विद्या का अभ्यास,

ब्रह्मचर्य का पालन, माता-पिता व गुरुजनों एवं दुःखी अनाथ प्राणियों की निःस्वार्थ भाव से सेवा तथा ईश्वर की भक्ति को अमृत के समान समझकर उसका श्रद्धापूर्वक सेवन करो । यदि इनमें से एक का भी निष्काम भाव से पालन किया जाय तो भी कल्याण हो सकता है, फिर सबका पालन करने से तो कल्याण होने में संदेह ही क्या है ?

सुबह सूर्योदय से पहले उठकर, स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वातावरण में प्राणायाम करना चाहिए । तदुपरांत तुलसी के पत्ते चबाकर एक गिलास पानी पीना चाहिए । इन सबसे बुद्धिशक्ति में गजब की वृद्धि होती है ।

छः घंटे से अधिक सोना, दिन में सोना, काम में सावधानी न रखना, आवश्यक कार्य में विलम्ब करना आदि सब 'आलस्य' ही है । इन सबसे हानि ही होती है । अतः सावधान ! मन, वाणी और शरीर के द्वारा न करने योग्य व्यर्थ चेष्टा करना तथा करने योग्य कार्य की अवहेलना करना 'प्रमाद' है । ऐश-आराम, स्वादलोलुपता, फैशन, सिनेमा आदि देखना, क्लबों में जाना आदि सब 'भोग' है । काम, क्रोध, लोभ, मोह, दम्भ, दर्प, अभिमान, अहंकार, मद, ईर्ष्या आदि 'दुर्गुण' है । संयम, क्षमा, दया, शान्ति, समता, सरलता, संतोष, ज्ञान, वैराग्य, निष्कामता आदि 'सद्गुण' है । यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, व्रत और सेवा- पूजा करना तथा अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का पालन करना आदि 'सदाचार' है ।

इन शास्त्रीय वचनों को बार-बार पढ़ो, विचारो और अवश्य उन्नति के पथ पर अग्रसर बनो । शाबाश वीर ! शाबाश ! हरि ॐ.... ॐ.... ॐ...

हिम्मत करो । हाँ... हाँ... आगे बढ़ो । दृढ़ निश्चय करो । प्रयत्न करो । हाँ... हाँ... आगे बढ़ो ।

पू. बापू के सत्संग कार्यक्रम

(१) सूरत आश्रम में रक्षाबंधन महोत्सव सत्संग समारोह ता. : २५ से २९ अगस्त '९६. समय : रोज शाम ३-३० से ६. स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, वरियाव रोड़, जहाँगीरपुरा । फोन : ६८५३४१. **(२) गोंडल (सौराष्ट्र) में दिव्य सत्संग समारोह :** ता. : २८-८-९६ से १-९-९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. प्रथम तीन दिन पू. बापू के कृपापात्र साधक शिष्य श्री सुरेशानंदजी का सत्संग होगा । स्थल : गोकुलधाम, बस स्टेन्ड के पास । फोन : २१६२८,२३३०९, २३२७६. **(३) राजकोट में जन्माष्टमी महोत्सव सत्संग समारोह :** ता. ४ से ८ सितम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. स्थल : रेसकोर्स मैदान । फोन : ९११३५४, ९११३७०. **(४) फरीदाबाद में दिव्य सत्संग अमृतवर्षा :** ता. ९ से १३ सितम्बर '९६. प्रथम तीन दिन श्री सुरेशानंदजी का सत्संग होगा । स्थल : सेक्टर १६-ए, सागर सिनेमा के पीछे, सनफ्लेग हॉस्पिटल के पास । फोन : (०१२९) २८६५६४, २२२६९७, २१६४३८. **(५) वृन्दावन में गीता-भागवत सत्संग समारोह** ता. १५ से २० सितम्बर '९६. स्थल : अटल्ला चुंगी नाका । फोन : (०५६५) ४४३२६२. **(६) बरेली में ज्ञान भक्ति सत्संग समारोह :** (संभावित)ता. २ से ६ अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग-प्रवचन : ५ अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल राधा माधवनगर, स्पोर्ट्स स्टेडियम के पास फोन : (०५८१) ४७४३०५, ४७९७६३, ४७९६७६. **(७) अयोध्या में दिव्य ज्ञानामृत सत्संगवर्षा :** ता. ९ से १३ अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन : १२. अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल कार सेवक पुरम । फोन : (०५२७) ८१२७११, ८१२४४४. **(८) गोरखपुर में सत्संग योगामृत वर्षा :** ता. १६ से २० अक्तूबर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३-३० से ६. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन : १८ अक्तूबर सुबह ९-३० से १२. स्थल गोरखनाथ मंदिर परिसर । फोन : (०५५१) ३३३८१८, ३४३६०४, ३३४०४१. **(९) फजिलका भक्ति ज्ञान सत्संग सरिता :** ता. १४ से १७ नवम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग प्रवचन : १६ नवम्बर सुबह ९-३० से १२. स्थल : गवर्नमेन्ट सिनियर हायर सेकेण्डरी स्कूल (Boys), फजिलका । फोन ६२०५६, ६१५८९. **(१०) अमृतसर में ज्ञान भक्ति योग सत्संग समारोह** ता. १९ से २५ नवम्बर '९६. **(११) अंबाला में :** ता. २८ नवम्बर से २ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. स्थान : गांधी मैदान फोन : ६४३०५३, २०७७३, ६४२५३४, ६४०५७५. **(१२) हिसार में ज्ञान भक्ति योगवाणी** (संभावित) ता. ४ से ८ दिसम्बर '९६. सुबह ९-३० से १२. शाम ३ से ५-३०. विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्संग-प्रवचन : ७ दिसम्बर सुबह ९-३० से १२. स्थल : पुलिस लाइन । फोन ३४९४६, ३४४९१. **(१३) जोधपुर में (संभावित) :** ता. ११ से १५ दिसम्बर '९६. **(१४) बड़ौदा में :** ता. १८ से २२. दिसम्बर '९६. **(१५) करनाल में** ता. २२ से २६ जनवरी '९६. सुबह ९-३० से ११-३० शाम ३ से ५-३० स्थान सेकटर १२, हुडा मैदान । फोन : २५११३७, २५०१०५, २५०४६०, २३१८४, २५२०९५

योगीराज म. मं. स्वामी श्री शान्तानन्दजी सरस्वती

स्वर्गाश्रम, हृषिकेश (उ.प्र.)द्वारा प्रेषित

मंगल कामना

पूज्यपाद राष्ट्रसंत श्री आसारामजी बापू लोकप्रिय ही नहीं, अपितु महान् आध्यात्मिक विभूतियों में से हैं । आपके द्वारा देश-विदेश में सत्य-सनातन धर्म व आदर्श भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार निरन्तर हो रहा है ।

आपकी अमृतवाणी श्रवणार्थ हजारों श्रद्धालु भक्तगण आपकी सत्संग-वार्ताओं में उपस्थित रहते हैं ।

श्री बापूजी की वाणी में मधुरता, सरलता, साम्यभाव एवं आकर्षण की महान् शक्ति है । सबसे बड़ी विशेषता उनके हरिनाम संकीर्तन में है, जिसमें वे ध्यानावस्थित होकर श्रोताओं को भावविभोर कर देते हैं ।

मैं श्री योग वेदान्त सेवा समिति द्वारा प्रकाशित 'ऋषि प्रसाद' मासिक पत्रिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ ।

जगद्गुरु पीठाधीश्वर आचार्य म. मं. स्वामी श्री प्रकाशानन्दजी महाराज

जगद्गुरु आश्रम, कनखल, हरिद्वार (उ. प्र) द्वारा प्रेषित

मंगल कामना व संदेश

मूलत: मनुष्य का आकार समान होता है । इसमें कुछ भाग्यशाली जन्म से ही संत प्रकृति को लेकर आते हैं । वे उच्च पद पर जाने के लिये कोई नया प्रयास नहीं करते । उनमें ईश्वरनिष्ठा, विनम्र स्वभाव, मृदु वाणी, भूतमात्र के लिये दया, स्व-परभाव का अभाव, उदारता तथा **'वसुधैवकुटुम्बकम्'** जैसे स्वभाव उनके जीवन का अनायास उद्देश्य बन जाता है । उनमें से कुछ ऋषि, संत, विद्वान तथा संतशिरोमणि आसारामजी जैसे संत भी होते हैं । मुझे विश्वास है कि श्री आसारामजी अपने सत्संग की गंगाधारा में हिन्दुत्व की रक्षा का भी विशेष ध्यान रखेंगे ।

आज मेरे हाथ में 'ऋषि प्रसाद' नाम की पत्रिका आयी । मैंने इस पत्रिका का आद्योपान्त अध्ययन किया । इसमें धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की सुरक्षा का रूप झलकता देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई व साथ ही संतशिरोमणि आसारामजी का चित्र देखकर और सनातन हिन्दू धर्म के तात्त्विक वर्णन से मुझे अतीव प्रसन्नता हुई । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका देश की एकता, अखंड़ता के लिये उपयोगी सिद्ध होगी । इस पत्रिका का प्रचार-प्रसार समस्त विश्व में हो । मैं इसके संस्थापक की दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता हूँ ।

(पृष्ठ १२ का शेष)

जो शरीर एवं वस्तुओं को अनित्य समझता है वह अधिक लोभ, अहंकार एवं शोषण नहीं करेगा । वह स्वयं तो खुश रहेगा, औरों को भी सुख-शांति के रास्ते ले जायेगा । जिसके अंत:करण में भगवान के दिव्य कर्म एवं दिव्य जन्म का ज्ञान है उसके कर्मों में दिव्यता आ जाती है ।

कुछ लोग आलसी, प्रमादी होकर कर्मों को छोड़ देते हैं, उनका विनाश हो जाता है । कुछ लोग कर्मों का फल ऐहिक वस्तुएँ चाहते हैं, उनके कर्म भी उनको बाँधनेवाले हो जाते हैं लेकिन जो कर्म का फल दिव्य चाहता है वह अपने कर्मों को सत्संग एवं सत्कर्म द्वारा दिव्य बना लेता है एवं परम दिव्य परमात्मा के आनंद को पाने में भी सफल हो जाता है । फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता ।

हम भी अपने जन्म एवं कर्म को दिव्य बना लें । श्रीकृष्ण के माधुर्य को, श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य को, श्रीकृष्ण के आनंद को मनुष्य जाति अधिक से अधिक समझे, अधिक से अधिक पा ले यही इस जन्माष्टमी के पर्व का उद्देश्य है ।

गुरुभक्त उपमन्यु

परमात्मस्वरूप श्री सद्गुरुदेव के श्रीचरणों में जिसकी अनन्य श्रद्धा हो, गुरुवचनों पर पूर्ण विश्वास हो एवं गुरुआज्ञा-पालन में दृढ़ता हो उसके लिए जीवन में कौन-सा कार्य असंभव है ? प्राचीन काल में महर्षि आयोद धौम्य का एक ऐसा ही सत्‌शिष्य था उपमन्यु ।

महर्षि आयोद धौम्य ने उपमन्यु को गौएँ चराने का कार्य दे रखा था । उपमन्यु दिनभर जंगलों में गौएँ चराता एवं शाम को गुरुकुल में लौट आता ।
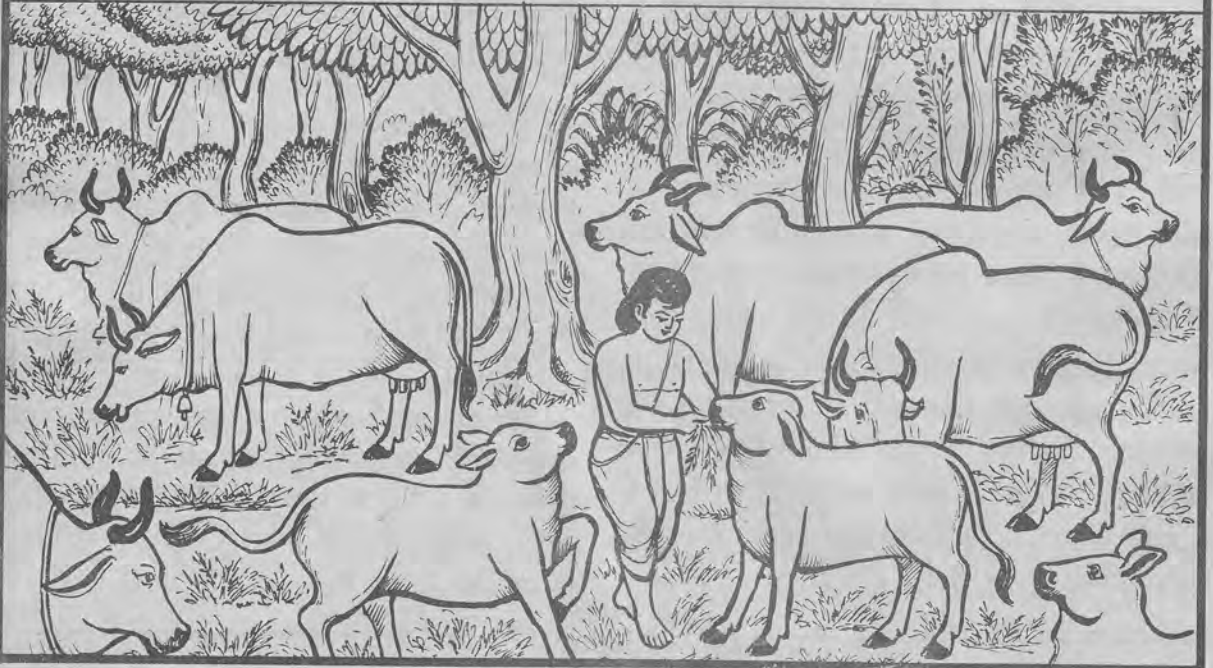
एक दिन गौएँ चराकर लौटते उस हृष्टपुष्ट उपमन्यु को देखकर गुरुदेव ने पूछा :

''बेटा उपमन्यु ! हम तुझे खाने को तो कुछ देते नहीं फिर भी तू इतना हृष्टपुष्ट कैसे है ?''

''भगवन् ! मैं भिक्षा माँगकर अपने शरीर का निर्वाह करता हूँ।''

''बेटा ! बिना गुरु को अर्पण किये भिक्षा पा लेना पाप है। अतः जो भी भिक्षा मिले, वह पहले मुझे अर्पण किया करो। मैं दूँ तब तुझे खाना चाहिए।''

''जी गुरुदेव ! बहुत अच्छा।''

उस सौभाग्यशाली शिष्य ने गुरु की आज्ञा मान ली और वह प्रतिदिन भिक्षा लाकर गुरु को अर्पण करने लगा। गुरुदेव तो उसकी परीक्षा ले रहे थे, उसे कसौटी पर कसकर खरा बना रहे थे। अग्नि में तपकर ही तो कुन्दन निखरता है। उपमन्यु जो भिक्षा लाता, वह पूरी की पूरी वे रख लेते। उसको खाने के लिए कुछ भी न देते।

चरकसंहिता में कहा है :

आहाराचारचेष्टासु सुखार्थी प्रेत्य चेह च ।
परं प्रयत्नभातिष्ठेद् बुद्धिमान् हित सेवने ॥

इस संसार में और मरने के बाद सुख की इच्छा रखनेवाले बुद्धिमान पुरुष को चाहिए कि वह आहार, आचार और सभी प्रकार की चेष्टाओं में हितकारक वस्तु के सेवन में अधिक प्रयत्न करे ।

तन्व नित्यं प्रयुंजीत स्वास्थ्यं येनानुवर्तते ।
अजातानां विकाराणामनुत्यन्तिकरं च यत् ॥

ऐसे आहार-द्रव्यों का नित्य सेवन करना चाहिये, जिससे स्वास्थ्य का अनुवर्तन होता रहे अर्थात् स्वास्थ्य उत्तम बना रहे और जो रोग उत्पन्न नहीं हुए हैं उनकी भी उत्पत्ति न हो सके ।

उपयोगी सूचनाएँ

१. किसी भी रोग की शुरूआत में उपवास, मूँग का पानी, मूँग, परमल, भुने चने, चावल की राब लेना लाभप्रद है ।

२. हरड़े स्वास्थ्य के लिये बहुत हितकारी है । भोजन के पश्चात् सुपारी की तरह तथा रात्रि को हरड़े अवश्य लेना चाहिए । इसे धात्री अर्थात् दूसरी माता भी कहा गया है । लेकिन थके हुए, कमजोर, प्यासे, उपवासवाले व्यक्तियों, गर्भवती स्त्रियों को हरड़े नहीं खाना चाहिए ।

३. भोजन करने के बाद मुँह धोकर दोनों हथेलियों को परस्पर रगड़कर आँखों पर मलने से आँखें स्वस्थ रहती हैं तथा नेत्रज्योति बढ़ती है ।

४. नेत्रों के रोगों से बचने के लिये मुँह में सादा पानी भरकर सादे पानी से नित्य प्रात: आँखों पर छींटे मारने चाहिए ।

५. दोपहर के भोजन के बाद सौ कदम चलकर १० मिनट वामकुक्षि (बायीं करवट लेटना) स्वास्थ्य के लिये लाभदायी है ।

६. साँस का दायाँ स्वर चलता हो तब भोजन और बाएँ स्वर में पेय पदार्थ लेना स्वास्थ्य के लिये हितकर है ।

७. भोजन एवं सब्जी के साथ फलों का रस कभी न लें । दोनों के बीच दो घण्टे का अंतर अवश्य होना चाहिए ।

८. रात्रि को फलों का रस पीना हितकर नहीं है ।

९. प्रात:काल नंगे पैर हरी घास पर चलने से नेत्रज्योति बढ़ती है और अन्य समय नंगे पैर चलने से दृष्टि कमजोर होती है ।

१०. शीत में प्लास्टिक अपना प्रभाव छोड़ता है अत: फ्रीज में काम आनेवाली प्लास्टिक की बोतलों का प्रयोग स्वास्थ्य के लिये अच्छा नहीं है क्योंकि इसमें रखी सामग्री प्लास्टिक से प्रभावित हो जाती है और दूषित होकर स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती है ।

११. आम के रस की अपेक्षा आम को चूसकर खाना गुणकारी है ।

१२. केले को सुबह खाने से उसकी कीमत ताँबे जैसी, दोपहर को खाने से चाँदी जैसी और शाम को खाने से सोने जैसी होती है । श्रम न करनेवालों को अधिक मात्रा में केला खाना हानिकारक है ।

१३. रात्रि को दही और छाछ बुद्धि को कमजोर करते हैं ।

१४. सावन में दूध वर्जित है और भादों में दही-छाछ । दही के लिए कहावत भी है कि :

भादों की दही भूतों को कार्तिक की दही पूतों को ।

लाभकारी प्रयोग

१. आधा चम्मच त्रिफला चूर्ण थोड़े-से शहद (मध) के साथ लेकर ऊपर से दूध पी लें । यह प्रयोग कब्ज, जिगर की बीमारी, गुर्दा, शरीर के दर्दों में लाभप्रद है ।

२. प्रति दिन १०-१५ मुनक्के दूध में उबालकर खायें व उसी दूध को पी लें । यह कब्ज को दूर करने का अद्‌भुत प्रयोग है ।

३. सौंफ और जीरा सम भाग लेकर तवे पर भूनें और बारीक पीसकर ३-३ ग्राम दिन में २-३ बार पानी से खिलावें । दस्त बन्द करने के लिये यह सस्ता व अच्छा इलाज है ।

४. नीम के पत्तों का १० ग्राम रस १० ग्राम शहद में मिलाकर पिलाने से उदरकृमि नष्ट हो जाते हैं ।

५. बच्चों को ५-६ ग्राम नारियल का तेल पिलाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं ।

६. नागरबेल के पान को एरंड का तेल लगाकर,

हल्का-सा गर्म कर छोटे बच्चे की छाती पर रखकर, गर्म कपड़े से हल्का सेक करने से, बालक की छाती में भरा कफ निकल जाता है ।

७. नागरबेल के पान के रस में शहद मिलाकर चाटने से छोटे बच्चों का अफरा, अपच तुरंत ही दूर होता है ।

८. रोज थोड़ा-सा अजवायन खिलाने से प्रसूता की भूख़ खुलती है, आहार पचता है, अपानवायु छूटता है, कमरदर्द दूर होता है और गर्भाशय की शुद्धि होती है ।

९. सरसों या तिल के तेल में तुलसी के पत्ते डालकर धीमी आँच पर रखें । पत्ते जल जाने पर उतारकर छान लें । इस तेल की दो-चार बूँदें कान में डालने से सभी प्रकार के कान-दर्द में लाभ होता है ।

१०. दो तोला कालीद्राक्ष (मुन्नका) २० तोला पानी में रात्रि को भिगोकर सुबह उसे मसलकर आधा चम्मच त्रिफला चूर्ण के साथ पीने से कब्जी, रक्तविकार, पित्त के दोष आदि मिटकर काया कंचन जैसी होती है ।

११. हरे धनिए के रस में सम मात्रा में मिश्री मिलाकर अग्नि पर चाशनी तैयार करके शरबत तैयार करें । इस २०-२५ ग्राम शर्बत में आवश्यकतानुसार जल मिलाकर पीने से अनिद्रारोग-निवृत्ति में सहायता मिलती है ।

१२. बालों में जूएँ होने पर तुलसी के पत्ते पीसकर सिरपर लगा लें । तदुपरांत सिर पर कपड़ा बाँध लें । सारी जूएँ मरकर कपड़े से चिपक जाएँगी । दो तीन बार लगाने से ही सारी जूएँ साफ हो जाएँगी ।

सावधान रहो

❀ पान के अधिक सेवन से केन्सर होने की संभावना रहती है । अधिक पान खाने से रक्त में एक विशेष प्रकार का विष तत्त्व पहुँच जाता है जिससे कि पाचन क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । कत्था भी स्वास्थ्य को हानि करता है जिसके सेवन से फेंफड़ों में शुष्कता तथा आँतों में भी विकृति आ जाती है । सुपारी खाने से धातु तो क्षीण होती ही है साथ ही त्वचा रोग भी उत्पन्न होते हैं जिसमें सारे शरीर में खुजली होने लगती है । पान खाने से मसूड़े कमजोर होते हैं व दाँत जल्दी गिर जाते हैं । अधिक पान खाने से देह, दृष्टि, दाँत, जठराग्नि, कान की शक्ति, वर्ण और बल नष्ट होते हैं । अत: पान खानेवाले सावधान !

चाय

मनुष्य शरीर पर चाय का बहुत ही खराब असर होता है । चाय प्राकृतिक स्थिति के विरुद्ध हृदय की धड़कनें बढ़ाती है । स्नायुतंत्र के ऊपर प्रकृति-विरुद्ध असर डालकर अनिद्रा का रोग उत्पन्न करती है । आरोग्यता की दृष्टि से दोनों बातें नुकसानप्रद हैं ।

चाय को अधिक उबालने से टेनिन नामक एसिड उत्पन्न होता है जो कि यकृत को हानि पहुँचाता है, रक्तपरिभ्रमण को सुचारु रूप से नहीं होने देता । ज्यादा उबाली चाय में यह एसिड अधिक होता है जो कि विषतुल्य काम करता है । चाय ज्ञानतंतुओं को क्षणिक उत्तेजना प्रदान करती है लेकिन बाद में ज्ञानतंतु की शक्ति क्षीण होती जाती है । यह पाचनशक्ति को भी मंद करती है, रक्त बनने की क्रिया कम हो जाती है ।

एक बार जिन्हें चाय की बुरी लत पड़ जाती है उन्हें बिना चाय के शौच खुलकर नही आता ।

चाय का अधिक सेवन करने से शरीर की धातुएँ क्षीण होने लगती हैं व शरीर कमजोर होता जाता है । चेहरा ओजहीन व मुरझाया-सा हो जाता है, रक्तचाप बढ़ जाता है । चाय पीने से छाती में दर्द, निद्रा का नाश, वीर्य का पतला होना व जठरा मंद हो जाती है । फलस्वरूप पाचनक्रिया मंद और विकृत हो जाती है और सदा कब्ज बनी रहती है ।

महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी चाय का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे उन्हें कब्ज, छाती में दर्द, स्नायु की दुर्बलता व हिस्टीरिया, प्रदर रोग जैसे रोगों का शिकार होना पड़ता है ।

वर्षा या ठंड के मौसम में गर्म पेय पीने की इच्छा होने पर चाय के बदले तुलसी, पोदीना, सोंठ, इलायची आदि का मिश्रण करके, इसकी चाय बनाकर पी सकते हैं । यह देशी चाय जुकाम, मंदाग्नि, कफ आदि का नाश करती है ।

कॉफी

सामान्यत: कॉफी के अवगुण भी चाय के ही समान हैं । अधिकांशत: लोग मस्तिष्क की थकान मिटाने के लिये कॉफी पीते हैं, साथ ही आँख व ज्ञानतंतु का कमजोर होना और पाचनक्रिया का मंद होना आदि बीमारियों को भी आमंत्रित करते हैं ।

कहावत भी है कि :

कफनाशक वायु हरन, धातु क्षीण बल हीन ।
खून का पानी कर दे, गुण दो अवगुण तीन ॥

कॉफी में वायु व कफ का नाश करने के दो गुण

तो हैं साथ ही धातु क्षीण करना, बलहीन करना व खून का पानी करना ये तीन अवगुण भी हैं ।

कॉफी के सेवन से वीर्य पतला होता है, ज्ञानतंतु निर्बल बनते हैं और जठराग्नि मंद हो जाती है । फलस्वरूप अजीर्ण आदि रोग होते हैं ।

चाय-कॉफी में पोषक तत्त्वों का बिल्कुल अभाव है अत: स्वास्थ्य की दृष्टि से इनका प्रयोग अनुचित है ।

कॉफी के स्थान पर सेकी हुई गेहूँ से बनी आदर्श कॉफी पी सकते हैं । कासमर्द या पुवाड़िये के बीजों की कॉफी पीना स्वास्थ्यं के लिये हितकारी होता है ।

❀ बाजारू आईसक्रीम का सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से हितावह नहीं है क्योंकि इसमें तीस प्रतिशत बिना उबला और बिना छना पानी, छ: प्रतिशत चरबी और सात-आठ प्रतिशत शक्कर होती है । इसके अतिरिक्त इसमें अन्य रासायनिक तत्त्वों का प्रयोग होता है जो कि स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं ।

❀ एल्यूमिनियम के बर्तन खाने, पीने और पकाने के प्रयोग में नहीं लाने चाहिए । इन बर्तनों में से एल्यूमिनियम धातु के बारीक कण आहार में मिलकर पेट में हल्के विष का काम करते हैं ।

❀ आहार विशेषज्ञों का कहना है कि वनस्पति घी से हड्डियाँ कमजोर एवं आँखों की दृष्टि मंद पड़ती है । अत: वनस्पति घी के स्थान पर तिल या सरसों के तेल अथवा शुद्ध देशी घी का प्रयोग करें ।

अत्यंत गुणकारी छाछ

मनुष्य शरीर में जो रक्तवाहिनियाँ होती हैं उनमें धीरे-धीरे अनेक प्रकार के क्षार द्रव्य आ जाने के कारण रक्त ठीक तरह से प्रवाहित नहीं हो पाता है । फलस्वरूप असमय बाल सफेद हो जाते हैं, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, युवा अवस्था में ही बुढ़ापा आ जाता है । ये क्षार हड्डियों के जोड़ों में जमा हो जाने के कारण गठिया व सन्धिवात जैसे रोग उत्पन्न होते हैं ।

छाछ के सेवन से ये क्षार मूत्र के रास्ते बाहर निकल जाते हैं और भूख खुलकर लगती है, पाचनशक्ति बढ़ जाती है । उदर रोगों को दूर रखने, पाचनशक्ति को तीव्र करने व शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन छाछ का सेवन हितकारी है ।

दही को मथकर जो छाछ बनायी जाती है, आयुर्वेद में उसके पाँच प्रकारों का वर्णन आता है : घोल, मथित, तक्र, उदश्वित्, छच्छिका ।

घोल : दही को बिना जल डाले ही मथकर तैयार द्रव्य को घोल कहते हैं । यह गाढ़ा, पचने में भारी, शक्तिदायक व शक्कर मिलाकर सेवन करने से वात व पित्त दोषों को दूर करता है ।

मथित : दही को मथने से पहले उसकी पूरी मलाई निकालकर मथा जाता है उसे मथित कहते हैं । यह कफ व पित्त का नाश करता है ।

तक्र : दही को अच्छी तरह मथकर उसमें उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर बनाये द्रव्य को तक्र कहते हैं । यह वात, पित्त, कफ तीनों दोषों का शमन करता है । पचने में हल्का व मधुर होता है एवं पेट के रोगों को भी दूर करता है ।

उदश्वित् : इसमें और घोल में यही अन्तर है कि घोल में पानी नहीं मिलाया जाता, जबकि इसमें दही का आधा भाग पानी मिलाकर मथते हैं ।

छच्छिका : यह उपरोक्त चार प्रकारों से सुपाच्य व हलका होता है । दही से पूरी मलाई निकालकर मथते हैं एवं दही से कई गुना जल मिलाकर छाछ तैयार की जाती है । गाय के दूध की छाछ उत्तम, पथ्य, त्रिदोषनाशक, पेट के विकारों व बवासीर को दूर करनेवाली है ।

❀ वायु का प्रकोप या वातजन्य व्याधियाँ होने पर छाछ में सौंठ का चूर्ण, सेन्धा नमक, पिसा जीरा व जरा-सी हींग डालकर सेवन करना चाहिए । इस प्रयोग से बवासीर व अतिसार यानी पतले दस्ता में भी लाभ होता है । ❀ काला नमक व अजवायन का चूर्ण छाछ में डालकर प्रतिदिन दिन में एक-दो बार पीने से कब्ज मिट जाती है । ❀ सफेद जीरा भूनकर व पीसकर थोड़ा-सा चूर्ण ताजा छाछ में मिलाकर पीने से दस्त में लाभ होता है । ❀ आधा गिलास छाछ में १० ग्राम शहद डालकर पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं ।

छाछ कब निषिद्ध है ?

❀ तीव्र ज्वर की अवस्था में छाछ का सेवन कदापि न करें । ❀ हृदयरोगी व क्षय के रोगी के लिये भी छाछ का सेवन उचित नहीं । ❀ रात को छाछ का सेवन न करें । ❀ खाँसी, श्वास व निमोनिया के रोगी को छाछ का सेवन नहीं करना चाहिए । ❀ छाछ को ताँबे, पित्तल व काँसे के बर्तन में न रखें बल्कि स्टील, मिट्टी, चीनी, शीशे आदि के बने बर्तनों में रखें ।

कुप्रचारकों और निन्दकों से सावधान !

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

'हे भारत ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अपने साकार रूप से प्रकट होता हूँ ।' (श्रीमद्भगवद्गीता : ४.७)

जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब इस देश में राम, कृष्ण, बुद्ध जैसे नैमित्तिक अवतारों के द्वारा, कबीर, नानक, चैतन्य महाप्रभु जैसे नित्य अवतारी संत-महापुरुषों के द्वारा, धर्महीन नास्तिक तत्त्वों के विनाश द्वारा एवं म्लान, दीन, निर्माल्य और निस्तेज समाज में शौर्य, उत्साह, ज्ञान, भक्ति और धर्मरक्षा के सिंचन के द्वारा क्रमश: धर्म की रक्षा होती रही है ।

लेकिन धर्म के अभ्युत्थान के इन दैवी कार्यों में आसुरी तत्त्व कई प्रकार के विघ्न आदिकाल से डालते ही रहे हैं । विश्वामित्र के यज्ञ में मारीच जैसे राक्षस हड्डियाँ डालते थे । उनसे यज्ञ की सुरक्षा के लिये भगवान रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी का सहयोग लेकर विश्वामित्र ने यज्ञ संपन्न किया था । ऐसे ही प्रत्येक जागृत महापुरुष को उनके निंदकों ने मनगढ़ंत अनर्गल बातों के द्वारा कुप्रचार करके या उनको सुनियोजित षड़यंत्र के द्वारा जनमानस में गिराने का महापाप किया है । जब-जब संत-महापुरुष ऐसी दुष्चेष्टाओं को सह गये या पी गये, तब-तब समाज की भारी हानि हुई है । ऐसे कुप्रचार से भ्रान्त समाज के लोगों ने ईसा जैसे महापुरुष को क्रॉस पर चढ़ा दिया । मंसूर जैसे मस्त फकीर को शूली पर चढ़ा दिया । सुकरात जैसे महान् विचारक महात्मा को जहर पिला दिया । इससे स्वात्मानुभव से तृप्त, निजानंद की मस्ती में मस्त उन अमरत्व के अनुभवी महात्माओं का तो वे दुष्ट कुछ भी नहीं बिगाड़ सके लेकिन तत्कालीन समाज का सर्वांगी उत्थान उन असामाजिक तत्त्वों के द्वारा घोर पतन में बदल गया । इस देश में बड़े-बड़े महापुरुषों के प्रागट्य की महान् परंपरा जैसे आज तक मौजूद है ऐसे ही मारीच, रावण, कंस जैसे विरोधी दुष्टों की भी परम्परा मौजूद है ।

संत श्री आसारामजी आश्रम की विश्वव्यापी सेवाओं को आज कौन नहीं जानता ? पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी के द्वारा करोड़ों लोगों ने लाभ उठाया है, जीवन में अपूर्व शांति और निर्विषय आत्मिक सुख का एहसास किया है । आश्रमों में आयोजित ध्यान योग शिविरों के द्वारा लाखों-लाखों लोगों ने जीवन में आमूल परिवर्तन का अनुभव किया है । विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों के द्वारा हजारों-हजारों युवानों की जीवन-बगिया में नैतिकता, चरित्रशुद्धि, व्यसनमुक्ति और दिव्य जीवन के पुष्प खिले हैं । लाखों-लाखों जरूरतमंद दरिद्रनारायणों की सहायता में अन्न, वस्त्र, मिठाइयाँ, छाछ आदि के नि:शुल्क वितरण के साथ आर्थिक सहायता भी की जाती है । सत्साहित्य के प्रकाशन और किफायती नोटबुक्स के द्वारा समाज के वाचक वर्ग और विद्यार्थी आलम की सेवा की जाती है । आयुर्वैदिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों की सेवा की जाती है ।

संत श्री आसारामजी आश्रम की ये सारी 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' प्रवृत्तियाँ नि:स्वार्थ समर्पित साधकों और साध्वियों के द्वारा की जाती हैं । अत: उन पर मनगढ़ंत आरोप करना एक अक्षम्य अपराध है ।

कई जगहों पर मनगढ़ंत आरोप एवं कुछ घटनाओं को विकृत रूप देकर कुछ अखबारों के जरिये व बेनामी साइक्लोस्टाईल कराकर पर्चे मंत्रियों, विधायकों व वरिष्ठ अधिकारियों को भेजकर उनको गुमराह करने का भी षड़यंत्र चल रहा है ।

ऐसी पवित्र संस्था के खिलाफ जनमानस को विषैला बनाने का षड़यंत्र जो कुप्रचारक कर रहे हैं उनको भगवान सद्बुद्धि दें । अशांति की आग तो वैसे ही फैल रही है और कुप्रचार करके इस पवित्र संस्था पर दोषारोपण करके समाज को आप कहाँ ले जाना चाहते हैं ?

इस प्रकार के अनर्गल आरोपों से लोगों की श्रद्धा तोड़ने का जो षड़यंत्र चल रहा है, उससे आश्रम के प्रति समाज की श्रद्धा अश्रद्धा के स्थान पर महा-श्रद्धा में बदल रही है ।

शबरी भीलन रास्ते पर फूल बिछाती थी । ऐ कुप्रचार करनेवालों ! आप फूल न बिछा सको तो कोई बात नहीं

लेकिन समाज को गुमराह करने के काँटे बिछाकर अपनी सात-सात पीढ़ियों को नरकों में क्यों ढकेल रहे हो ?

नानकजी ने कहा है :

संत का निंदक महा हत्यारा ।
संत का निंदक परमेश्वर का मारा ॥
संत के निंदक की पुजे ना आस ।
नानक ! संत का निंदक महा निराश ॥

तुलसीदासजी ने भी कहा है :

हर गुरु निंदक दादुर(मेढ़क) होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

तो ऐ निंदकों ! सत्प्रवृत्ति करनेवाले, शांति देनेवाले मठ, मंदिर व आश्रम का फायदा उठाओ, हरिनाम की प्यालियाँ पियो । निंदारूपी विष स्वयं क्यों पीते हो एवं औरों को पिलाते हो ? कुदरत तुम पर कोपायमान हो उसके पहले ही सावधान हो जाओ ।

ऐ कुप्रचारकों ! कुदरत का कोप एवं लोगों की, भक्तजनों की व साधकवृन्द की बददुआएँ तुम्हें कौन-से नरकों में ढकेल देगी, तुम्हें पता ही न चलेगा ।

ओ धर्मप्रेमी, ईश्वरप्रेमी, समाज के हितचिन्तक सज्जनों ! हमारा सबका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि समाज को भ्रान्त (गुमराह) करनेवाले ऐसे आसुरी तत्त्वों के द्वेषपूर्ण क्रिया-कलापों से समाज को अवगत कराएँ । अन्यथा ऐसे ब्रह्मनिष्ठ, तत्त्ववेत्ता संत-महापुरुषों से समाज यदि विमुख हो जाएगा तो भौतिकवाद, भोग-विलास, अनैतिकता, अश्लीलता और दुराचार की बाढ़ में पूरी मानवता ही बह जाएगी... डूब जाएगी ।

अत: ऐसे कुप्रचारकों एवं निंदकों से सावधान !

- संपादक

'ऋषि प्रसाद' के पाठकगण, सदस्यों एवं एजेन्ट बन्धुओं से निवेदन

(१) 'ऋषि प्रसाद' के गतांकों में दी गई सूचना के अनुसार सर्वविदित है कि अप्रैल '९६ से 'ऋषि प्रसाद' की द्विमासिक सदस्यता योजना समाप्त कर दी गई है । अत: जो आजीवन सदस्य सिर्फ द्विमासिक पत्रिका ही प्राप्त कर रहे थे उनसे निवेदन है कि वे कृपया अतिरिक्त रू. २५० जमा करवाकर अपनी सदस्यता को मासिक आजीवन सदस्यता में परिवर्तित करवा लें ।

(२) 'ऋषि प्रसाद' के पाठक इस अंक से रू. २०० जमा करवाकर पाँच साल के लिए भी सदस्य बन सकते हैं ।

विशेष योजना

आजीवन सदस्य बनकर उपहार प्राप्त करें

'ऋषि प्रसाद' के नये बननेवाले सभी आजीवन सदस्यों को पू. बापू की अमृतवाणी की एक आडियो कैसेट भेंट में दी जाएगी ।

डाक से कैसेट मँगवाने सम्बन्धी जानकारी

अगर आप पूज्यश्री की आडियो-विडियो कैसेट पोस्ट पार्सल से मँगवाना चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें :

(१) कैसेट सिर्फ रजिस्टर्ड पार्सल से भेजी जाती है । VPP से नहीं भेजी जाती ।

(२) कैसेट का पूरा मूल्य एवं डाक खर्च पैकिंग खर्च के साथ अग्रिम डी. डी. अथवा मनीआर्डर से भेजना आवश्यक है । कैसेट का मूल्य इस प्रकार है :

(A) आडियो कैसेट : मूल्य रू. २०/- प्रति कैसेट

इसके अतिरिक्त डाक खर्च इस प्रकार :

5 कैसेट तक के लिए Rs. 12 | 15 कैसेट तक के लिए Rs. 24
10 कैसेट तक के लिए Rs. 18 | 20 कैसेट तक के लिए Rs. 30

(B) विडियो कैसेट : मूल्य Rs. 130/-(130 मिनट)
Rs. 185/-(180 मिनट)

इसके अतिरिक्त डाक खर्च इस प्रकार :

1 कैसेट तक के लिए Rs. 12 | 6 कैसेट तक के लिए Rs. 24
3 कैसेटें तक के लिए Rs. 18 | 8 कैसेट तक के लिए Rs. 30

खास सूचना : एक साथ दस कैसेट लेने पर एक कैसेट भेंट दी जाती है लेकिन डाक से कैसेट मँगवाने पर कैसेट भेंट नहीं मिलेगी ।

❀ डी. डी. या मनीआर्डर भेजने का पता ❀
कैसेट विभाग, श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की एजेन्सी हेतु जानकारी

यदि आप अपने गाँव अथवा शहर में 'ऋषि प्रसाद' का वितरण-विक्रय करके पू. बापू के सत्संग-प्रसाद का लाभ जन-जन तक पहुँचाने के इच्छुक हों तो कमिशन एवं विक्रय की शर्तों आदि की जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें : प्रचार-प्रसार विभाग, 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय, श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

मुझे त्रेतायुग के श्रीराम की झाँकी कलियुग में बापू श्री आसाराम में हुई

पूज्य सद्‌गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि कोटि प्रणाम !

बहुचर्चित टी. वी. धारावाहिक 'रामायण' मैंने २-३ बार देखा जो कि मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मेरी ऐसी धारणा रही कि शायद जीवन में इससे और अच्छा कुछ देखने को नहीं मिलेगा। इस धारावाहिक की अन्तिम किश्तें जिसमें भगवान श्रीराम इस जगत से प्रयाण करने के लिये सरयू नदी में उतरते हैं तो वे अपने परम प्रिय भक्तों को भी भवसागर से पार ले चलते हैं । उस किश्त को देखकर मेरा मन और हृदय बहुत भीगा था और अनजाने में कल्पना करने लगा कि काश ! इस कलियुग में हमें भी किसी ऐसे सत्पुरुष का सान्निध्य मिले जो हमें इस भवसागर से पार उतारने में सक्षम हों और हम भी उनका प्रेम-प्रसाद पाकर धन्य हो जायें। फिर मन सोचने लगा कि ऐसा सम्भव ही नहीं है क्योंकि वह तो त्रेता युग की बात थी और इस कलियुग में ऐसा कैसे सम्भव है ? फिर भी मन में ऐसी लालसा एवं उत्कंठा तो जागी ही कि काश ! मैं भी त्रेता युग में होता । तब मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था कि मेरा हरि अन्तरात्मा तो मेरे अन्दर ही विद्यमान है जो मेरी इस उत्कंठा को जान गया है ।

"काश ! इस कलियुग में हमें भी किसी ऐसे सत्पुरुष का सान्निध्य मिले जो हमें इस भवसागर से पार उतारने में सक्षम हों और हम भी उनका प्रेम-प्रसाद पाकर धन्य हो जायें ।"

जब परम पूज्य सद्‌गुरुदेव के चरणकमल पानीपत में पड़े तो दिनांक : २४-१-९६ को मैं बापूजी के दर्शन करने के लिये प्रात:काल सत्संग में गया और उनके पहले ही दीदार से मेरा मस्तिष्क बँध गया और ऐसा बँधा कि मैं उनके प्रवचन सुनता गया और मेरे सर्व संशय कटते गये । जिस दिन मैं जो संशय लेकर सत्संग में गया, उसी समय सत्संग में उत्तर मिला और दिनांक : २८-१-९६ को मैंने पूज्यश्री से दीक्षा ग्रहण की । ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरी लालसा और उत्कंठा जो 'रामायण' धारावाहिक देखने के बाद जागी थी वह पूर्ण हो गई है और परमात्मा सचमुच मेरे द्वार पर ही आ गये हैं और मुझे अपना लिया है । तबसे मुझे जो आनन्द और सुख मिला है उसका बयान शब्दों में करना मेरे बस की बात नहीं। मुझ जैसे दुष्प्रवृत्तिवाले व्यक्ति पर प्रभु इतनी कृपा कर सकते हैं तो सम्पूर्ण विश्व पर उनकी कृपा कैसे नहीं होगी ? कई बार ऐसा भी लगता है कि कहीं जो सुख हमें प्राप्त हो रहा है, वह सपना ही न हो कि सपना टूटते ही सुख भी बिखर जाये ! पर नहीं, ऐसे स्वर्गीय झोंकों से दिल सराबोर होता ही जायेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है । प्रभु से मेरी यही बार-बार प्रार्थना है कि ऐसा कोई क्षण न आये जब में अपने सद्‌गुरु के चरणकमलों का ध्यान भूलूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रभु के लिये सच्ची तड़प जागने पर ऐसे परम गुरु की प्राप्ति

"मेरी उत्कंठा जो 'रामायण' धारावाहिक देखने के बाद जागी थी वह पूर्ण हो गई है और परमात्मा सचमुच मेरे द्वार पर ही आ गये हैं और मुझे अपना लिया है। तबसे मुझे जो आनन्द और सुख मिला है उसका बयान शब्दों में करना मेरे बस की बात नहीं ।"

होती है ।

मैं एक सहकारी समिति में कार्यरत हूँ और मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि जो मुझे ४० वर्ष में प्राप्त नहीं हुआ, वह परम पूज्य श्री गुरुदेव ने एक क्षण में मेरी झोली में उड़ेल दिया । ऐसे सद्गुरुदेव को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम हो, जिन्होंने मुझे सन्मार्ग बताया !

प्रभुचरणों में सद्गुरुदेवजी का शिष्य

- *देसराज*

मकान नं. १०९०, वार्ड-३, पचरंगा बाजार, पानीपत ।

❀

पू. बापू के सत्साहित्य एवं विडियो कैसेट से मेरी उत्कण्ठा उत्कट बनी

मेरा जन्म भगवद्भक्तों की पवित्र नगरी मथुरा में हुआ था । बचपन से ही मेरे माता-पिता ने मुझे उत्तम भगवद्भक्ति के संस्कारों से सिंचित किया था ।

मैंने अनेकों संत-महात्माओं के सत्साहित्य का अध्ययन किया । उनके वचनामृतों का लाभ भी लिया, लेकिन फिर भी मेरा हृदय तृप्त नहीं हो रहा था । विभिन्न नगरों, प्रांतों में हुए धार्मिक आयोजनों में भी मैं भटकता रहा, किन्तु शान्ति प्राप्त नहीं हुई ।

अचानक एक दिन दूरदर्शन द्वारा प्रसारित पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू की पीयूषवर्षी वाणी से मैं इतना आनंदित व आह्लादित हुआ कि उसी समय मैंने मन ही मन पूज्य बापूजी को अपने सद्गुरु के रूप में मान लिया । उसी दिन से पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग के कार्यक्रम कहाँ कहाँ हैं और उनसे मुझे दीक्षा कहाँ मिल सकती है यही जानने की उत्सुकता रात दिन मन में बनी रहती, क्योंकि मैं इस साखी को अच्छी तरह समझता था कि :

गुरु बिन भवनिधि तरहिं न कोई ।

जौ बिरंचि संकर सम होई ॥

> *"पूज्य बापूजी के सत्साहित्य के अध्ययन व उनकी विडियो कैसेटे देखकर मेरी उत्कंठा ने आग की तरह जोर पकड़ा ।"*

पूज्य बापूजी के सत्साहित्य के अध्ययन व उनकी विडियो कैसेटें देखकर मेरी उत्कंठा ने आग की तरह जोर पकड़ा और वह दिन भी आया जब दिनांक : २९-७-९६ के दिन दिल्ली के गुरुपूर्णिमा महोत्सव के दौरान आत्मारामी संत पूज्य बापूजी ने हजारों-हजारों लोगों के साथ मुझे भी गुरुदीक्षा प्रदान करके धन्य-धन्य किया ।

- *रूपनारायण अग्रवाल*

M.Sc., M.ed., Ph.D., D.Litt.,
Head of the Department of Education,
Merrut College, Merrut.

❀

दीपावली पर सांई ने विपदा से बचाकर सम्पदा को सँभाल लिया...

स्कन्दपुराणान्तर्गत श्रीगुरुगीता में भगवान शिव माँ पार्वतीजी से कहते हैं :

एक एव परो बन्धुर्विषमे समुपस्थिते ।
गुरुः सकलधर्मात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

'जब विकट परिस्थिति उपस्थित होती है, तब वे ही एक मात्र परम बांधव हैं और सब धर्मों के आत्मस्वरूप हैं, ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार हो ।'

(श्रीगुरुगीता : १.४२)

श्रीगुरुगीता के इस पावन श्लोक का प्रत्यक्ष अनुभव मैंने गत वर्ष दिवाली की रात्रि को किया । मेरी दुकान में एक भयानक हादसा होने से पूर्व ही पूज्यश्री की असीम अनुकंपा से टल गया ।

> *"दुकान में अगरबत्ती की राख रूई की गादी पर गिरी और उसकी वजह से क्रमशः धीरे-धीरे गादी में आग लगना शुरू हुआ ।"*

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दिवाली की संध्या को मैंने अपने समस्त परिजनों के साथ शहर के मध्य में स्थित बाजार में अपनी दुकान पर पूजा-अर्चना की । पूजा-अर्चना के दौरान सभी ने पूज्यश्री को मानसिक भाव से दुकान में पूजन-अर्चन के समय आशीर्वाद प्रदान करने हेतु आमंत्रित

किया ।

हम सभी परिजन पूजा के बाद करीब दस बजे दुकान मंगल करके घर आ गये लेकिन त्यौहार के उत्साह में मैं यह भूल ही गया कि दुकान में अगरबत्ती रूई की गादी के ऊपर जलती छोड़ आया हूँ । परिणामत: अगरबत्ती की राख रूई की गादी पर गिरी और उसकी वजह से क्रमश: धीरे-धीरे गादी में आग लगना शुरू हुआ । रात्रि को १२ बजे के लगभग मेरे दुकान के पीछे रहनेवाली एक माई जब उधर से गुजरीं तो उन्हें कपड़े के जलने की बदबू आई और उन्होंने प्रयत्नपूर्वक पता लगाया कि क्या वह कपड़ा दुकान में जल रहा है ? उन्हें जैसे ही पता चला कि सायकल की दुकान में आग लगी है तो वे चौंकीं ! यद्यपि वे मुझे पहचानती थीं किन्तु मेरा घर वे नहीं जानती थीं । उन्हें यकायक पूज्यश्री की आशिष से प्रेरणा हुई और उन्होंने मेरे एक मित्र के द्वार खट-खटाये । लेकिन यहाँ भी नियति का खेल दिखये ! वह मित्र मुझे जानता था किन्तु उसने भी मेरा घर नहीं देखा था । लेकिन पूज्यश्री प्राय: कहते हैं :

जा पर कृपा रघुनाथ की होई ।
ता पर कृपा करे सब कोई ॥

इस प्रकार मेरे उस मित्र को मेरे भाई का घर स्मरण आया और वे दोनों तुरन्त मेरे भाई के घर पहुँचे और उसके जरिए मुझ तक आ पहुँचे । हम चारों दुकान के लिये घर से निकले । जब दुकान से थोड़ी दूरी पर थे तब हमें इतने तीव्र रूप से जलने की बदबू आ रही थी, जैसे कि कोई बड़ा हादसा हो चुका हो । मैंने पूज्य सद्गुरुदेव का स्मरण किया और दुकान का ताला खोला तो महा आश्चर्य ! लगभग तीन घण्टे तक रूई जलने के बाद भी कुछ खास नुकसान नहीं हुआ था । गादी के पास ही बड़ी मात्रा में घासलेट और ऑयल के केन भरे थे । यदि उनमें आग लग जाती तो भयानक हादसे की संभावना थी । मेरी दुकान के पास दर्जी की दुकान है और दुकान के पीछे लकड़ियों का भण्डार है । दुकान में भी कई टायर और ज्वलनशील वस्तुएँ भरी थीं । किन्तु जहाँ पूज्यश्री बिराजे हों वहाँ तो सुख-सम्पदा और शान्ति का निवास होता है न कि विनाश का ।

"दिवाली की रात आग लग जाती तो मेरी जगमगाती जिंदगी में गहन अंधकार छा जाता किन्तु पूज्यश्री की कृपा के होते हुए ऐसा कैसे हो सकता है ?"

मैं एक मध्यमवर्गीय साधक हूँ । दिवाली की रात आग लग जाती तो मेरी जगमगाती जिंदगी में गहन अंधकार छा जाता किन्तु पूज्यश्री की कृपा के होते हुए ऐसा कैसे हो सकता है ?

मैंने दुकान का दरवाजा खोलकर रूई की ग़ादी को बाहर फेंका और जैसे ही दुकान का धुँआँ हटा तो मेरी नजर पूज्यश्री की तस्वीर पर गयी और देखा कि पूज्य बापूजी अपनी उसी मनमोहक ब्रह्मानंद की मस्ती से मस्त मुस्कान बिखेर रहे थे । मुझे अहसास हुआ कि अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार, भाई ये सब मृत्यु (संकट) के अवसर पर कुछ काम नहीं आते । एक मात्र गुरुदेव ही उस समय तारणहार हैं ।

हम लोग वास्तव में कितने सौभाग्यशाली हैं कि पूज्य सद्गुरुदेव हमें साक्षात् नारायण के रूप में मिले हैं । इस घटना के बाद मेरे अन्तर्मन में बस ये ही पंक्तियाँ रह-रहकर उठती हैं :

जिसने नाम का दान लिया है ।
गुरु अमृत का पान किया है ॥
उनका योग-क्षेम वे रखते ।
वे न तीन तापों से तपते ॥
सभी शिष्य रक्षा पाते हैं ।
आपद रोगों से बच जाते हैं ॥

- गोविन्दलाल माहेश्वरी
शहर सराय, रतलाम (म.प्र.).

❀ आत्मवेत्ता गुरु के संग के प्रभाव से आपका जीवनसंग्राम सरल बन जाएगा । ❀ जब आपको दुन्यावी अपेक्षा नहीं रहती तब गुरु के प्रति भक्तिभाव जागता है । ❀ आपके गुरु की कृपा में श्रद्धा रखो और अपने कर्त्तव्य का पालन करो । *- स्वामी शिवानंदजी*

संस्था समाचार

सागवाड़ा : दिनांक : १२-७-९६ को पूज्य बापूजी गौरेश्वर (सागवाड़ा) आश्रम पहुँचे। बहुत दिनों से इस क्षेत्र में बारिश न होने के कारण श्री योग वेदान्त सेवा समिति ने पूज्यश्री से समय प्राप्त कर यहाँ पर १३ से १५ जुलाई तक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया।

आश्चर्य की बात है कि पूज्य बापूजी के राजस्थान क्षेत्र में संत श्री आसारामजी आश्रम, गौरेश्वर (सागवाड़ा) पहुँचते ही जबरदस्त बारिश शुरू हो गई। सर्वत्र पानी ही पानी ! पूज्यश्री के आश्रम में पधारने की खबर आग की तरह फैली। दूर-दराज के लोग दर्शनार्थ गौरेश्वर आश्रम आने लगे। जगह-जगह पर यही चर्चा सुनने को मिली कि जिनके इस क्षेत्र में चरण पड़ने पर इस अकाल की समाप्ति हुई और मेघराजा जमकर बरसे, वे सत्पुरुष कितने महान् होंगे !

दिनांक : १३ जुलाई से सत्संग का कार्यक्रम शुरू होना है और १२ तारीख तक पानी खूब जमकर गिरा। कितने ही दिनों से गर्मी की तपन से तपी पृथ्वी वर्षारंभ से शान्त हुई। इस इलाके के आदिवासी भाई-बहनों के हृदय में भी आनंद का संचार हुआ। दिनांक : १३ की सुबह बारिश एकदम शान्त। सूर्यनारायण ने भी दर्शन दिये एवं तीनों दिन सत्संग निर्विघ्न चला।

सर्वत्र शान्त, सुहावना व आनन्ददायक वातावरण... ऐसे आत्मारामी संत का पदार्पण और उनका सत्संग कार्यक्रम... वाकई में इस क्षेत्र के आदिवासी भाई-बहन व आमजनता का सौभाग्य ही था कि वे ऐसे महापुरुष का दर्शन व उनके सत्संगामृत का लाभ प्राप्त कर सके।

जहाँ भगवान का भजन, सत्संग, सत्कर्म आदि होते हैं वहाँ अकाल तो टलता ही है, साथ ही... जैसे तुलसीदासजी ने कहा है :

मेटत कठिन कुअंक भाल के।

भाग्य के कुअंक भी मिटने लगते हैं। बलिहारी है भगवन्नाम व सत्संग की।

दिनांक : १५ जुलाई को भण्डारे का आयोजन हुआ जिसमें असहाय व गरीब आदिवासी भाई-बहनों को भोजन-प्रसाद वितरण के साथ-साथ बर्तन व पशुओं के लिये चारा एवं आर्थिक सहायता प्रदान की गयी।

इन्हीं दिनों पास ही के दो गाँव छोटा दीवड़ा व बड़ा दीवड़ा में भी अकाल के कारण आदिवासियों व अन्य ग्रामजनों के मुरझाये हुए हृदय-कमलों को पूज्य बापूजी ने अपनी अमृतमयी वाणी से प्रफुल्लित कर दिया।

घाटौल : दिनांक : १६ जुलाई को सागवाड़ा से पंचेड़ जाते हुए बीच में घाटौल में हजारों आदिवासियों ने पूज्यश्री के सान्निध्य में उनके वचनामृतों का लाभ लिया, साथ ही भोजन-प्रसाद का भी आयोजन किया गया। जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता व वस्त्र आदि वितरित किये गये। जहाँ पर दो दिन पहले तक बारिश का नामोनिशान भी न था वहीं पर पूज्य बापूजी के आने के पहले रात को ही खूब जोरदार बारिश हुई। व्यवस्था करनेवालों ने हाथ ऊँचे कर दिये कि इतनी तेज बारिश होने के कारण पांडाल में पानी भरा है। सभी व्यवस्थाएँ अस्तव्यस्त हो गयी हैं। अब क्या करें ? लेकिन सुबह होते ही पूरा वातावरण साफ व सुमधुर हो गया। यहाँ की समिति के लोग व दूसरे सेवाधारी साधक फिर से व्यवस्था करने में पूरे तन-मन से जुटे और देखते-देखते पूज्यश्री के आने से पहले पूरा पांडाल श्रद्धालुगणों से भर चुका था। दूर-दूर से आये ग्रामजनों व आदिवासी भाई-बहनों ने सत्संग पांडाल में व आस-पास जगह न होने के कारण सड़क पर खड़े होकर पूज्य बापूजी की मनमोहक वाणी का लाभ लिया।

पंचेड़ : १६ जुलाई शाम को पूज्य बापूजी पंचेड़ (रतलाम) आश्रम पहुँचे। दिनांक १८ जुलाई को आश्रम से १० कि.मी. दूरी पर आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र सैलाना (म.प्र.) में विशाल आदिवासी भण्डारा एवं सत्संग पूज्यश्री के सान्निध्य में संपन्न हुआ। निराश्रित आदिवासियों के लिये आयोजित इस भण्डारे में दूर-सुदूर क्षेत्रों से आये वनवासियों को अन्न, वस्त्र, बर्तन एवं सत्साहित्य

वितरित किया गया। साथ ही गरीबों में आर्थिक सहायता भी प्रदान की गयी। बालयोगी श्री नारायण स्वामी ने भी सेवाधारियों के साथ स्वयं अपने हाथों से आदिवासियों को दक्षिणा, वस्त्र, धान, बर्तन आदि वितरित किये। यहाँ आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में चिकित्सक दल ने रोगियों का उपचार कर उन्हें दवाइयाँ भी वितरित कीं। मंत्रोच्चार पद्धति से भी सैकड़ों रोगियों को स्वास्थ्य लाभ मिला। इस अवसर पर पूज्य बापूजी ने आदिवासियों को सत्संग-सुधा का पान कराते हुए कहा :

"बुद्धि का आदर ही मनुष्य को बुद्धियोग में प्रतिष्ठित करता है। गरीबों, लाचारों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। सेवा से अन्तःकरण शुद्ध होता है और शुद्ध अन्तःकरण में ही ज्ञान का प्रकाश होता है। जब हम अन्तर्मुख होते हैं तभी उन्नत होते हैं।"

स्थानीय समाचार-पत्रों से प्राप्त समाचारों के अनुसार आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में यह भण्डारा अपने-आप में अद्वितीय था। उपस्थित आदिवासियों ने इतनी बड़ी तादाद में पहली बार लाभ लिया। इस आदिवासी भण्डारे में असंख्य आदिवासियों ने न केवल सत्संग गंगा में स्नान किया वरन् स्वास्थ्य-लाभ की कई कुँजियाँ भी पूज्य बापू से प्राप्त कीं। अपने जीवन को ओजस्वी बनाने का संकल्प लेते हुए आदिवासियों ने पूज्यश्री के आह्वान पर नशीले पदार्थों को त्यागने का साहस दिखाया।

आदिवासी भण्डारे से भोले-भाले वनवासियों के जीवन में एक शुभ अध्याय का शुभारंभ हुआ जो अन्ततोगत्वा पूज्यश्री के करकमलों से एक नवीन युग का सूत्रपात है। पूज्यश्री के सान्निध्य में ही पंचेड़ आश्रम पर सत्संग का आयोजन हुआ, जहाँ रतलाम व आसपास के गाँवों के जनसमूह ने उनके हृदय-स्पर्शी अमृतवचनों का लाभ लिया।

दिनांक : १९ जुलाई को पूज्य बापूजी ने आश्रम में नवनिर्मित दो मौनमंदिरों का भी उद्घाटन कर उनको शुभ संकल्पों व आध्यात्मिक आंदोलनों से स्वर्गीय कर दिया। इन मौनमंदिरों में साधना के लिये बैठनेवाले साधक को शरीरनिर्वाह के लिये आवश्यक सामग्री खिड़की में रख दी जाती है और वह साधक आवश्यकतानुसार खाद्य सामग्री अन्दर से खिड़की खोलकर ले लेता है।

इन मौनमंदिरों में साधना हेतु प्रवेश पानेवाले साधकों को बड़े ही दिव्य अनुभव होते हैं। मौनमंदिरों में प्रवेश पाने के इच्छुक साधकों का नंबर दो महीने, छः महीने, कहीं दो साल के बाद लगता है। नंबर न आने तक साधकों का नाम प्रतीक्षासूची में रहता है।

दिनांक : २० जुलाई को पूज्य बापूजी पंचेड़ से इन्दौर आश्रम के लिये रवाना हुए।

इन्दौर : खंडवा रोड़ स्थित आश्रम में दिनांक : २४ से २६ जुलाई तक पूज्यश्री के सान्निध्य में गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया। तीस वर्षों में यह दूसरा अवसर है कि पूज्य बापूजी ने यहाँ गुरुपूर्णिमा उत्सव के आयोजन की स्वीकृति प्रदान की।

दिनांक : २६ जुलाई को गुरुपूर्णिमा दर्शन प्रसंग पर आश्रम में देश-विदेश से आये श्रद्धालुओं का ताँता लगा हुआ था। खंडवा रोड़ पर वाहनों व पैदल चलने वालों की बड़ी भारी भीड़ थी। भारी वर्षा के बावजूद भी कतारबद्ध अनुशासित भक्तों व श्रद्धालुओं ने पूज्यश्री के दर्शनों व उनकी अमृतवाणी का लाभ लिया।

इस तीन दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव के अंतिम दिन व्यासपूर्णिमा के पावन पर्व की महत्ता के बारे में बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :

"और सभी पूर्णिमाओं को तो हम मनाते हैं लेकिन गुरुपूर्णिमा तो हमें मनाती है। यह हमारी बिखरी वृत्तियों को असत्य व अंधकार से आत्मप्रकाश की ओर ले आती है।"

उन्होंने कहा : *"बारह महीनों की पूर्णिमाओं का फल इस व्यासपूर्णिमा के दिन अपने सद्गुरु के दर्शन, सत्संग, व्रत, उपवास आदि से मिलता है।"*

पूज्यश्री ने कहा : *"जैसे किसान आषाढ़ी पूनम के आसपास के दिनों में बुवाई कर लेते हैं और चातुर्मास के बाद धन-धान्य प्राप्त कर लेते हैं ऐसे ही साधक भी आध्यात्मिक बुवाई करता है। किसान को तो लौकिक लाभ मिलता है परंतु साधक को तो अलौकिक मिलता है, भक्ति, प्रीति व आत्मलाभ होता है।"*

इस महोत्सव के दौरान पूज्य बापूजी ने इन्दौर की श्री योग वेदान्त सेवा समिति को विशेष निर्देश दिया कि गुरुदक्षिणा में व सत्संग में प्राप्त धनराशि, वस्तुएँ व खाद्य सामग्री अस्पतालों में रोगियों व गरीबों में वितरित की जाय तथा उन गरीब झोंपड़ियों व बस्तियों में जहाँ दरिद्रनारायण निवास करते हैं, उन्हें वर्षभर राशन दिया जाय । पूज्य गुरुदेव ने समिति को इस हेतु शहर के आसपास के क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर दरिद्रनारायणों की यथासंभव सेवा करने का निर्देशन दिया ।

दिनांक : २७ जुलाई दोपहर को पूज्यश्री वायुयान से दिल्ली के लिये रवाना हुए ।

दिल्ली : अपररिज रोड़ पर स्थित आश्रम में दिनांक : २८ व २९ जुलाई को पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आयोजन हुआ । इस महोत्सव के दौरान दिल्ली के अलग-अलग क्षेत्रों व विभिन्न प्रांतों से पूज्यश्री के दर्शनार्थ ऐसा अपार जनसमूह उमड़ा कि आश्रमवाले रोड़ पर आने-जानेवाला ट्राफिक जाम हो गया । २८ जुलाई की सुबह पूज्य बापूजी के व्यासपीठ पर पधारते ही राजधानी व भिन्न-भिन्न प्रांतों से आये श्रद्धालुगणों का विशाल जनसमूह पूज्यश्री के स्वागत में तालियों की गड़गड़ाहट व 'हरि ॐ' के गगनगामी गुँजन के साथ आनन्द के महासागर में लहराने लगा ।

इस महोत्सव के दौरान मुख्य-मुख्य संस्थाओं के ट्रस्टीगण, समाजसेवक व वरिष्ठ अधिकारी भी गुप्तरूप से पूज्य बापूजी के सत्संग में आकर बैठे थे । देखने में आ रहा था कि वे सब परमात्मा की मस्ती में मस्त इन आत्मारामी संत के दर्शन करके अपने कल्याणार्थ भीड़-भाड़ व शोरगुल से भरे राजधानी के वातावरण को छोड़कर इस आश्रम में उपस्थित हुए थे ।

आश्रम के बाहर जो ट्राफिक आ जा रहा था वह भी इतनी भारी तादाद में भगवद्भक्तों को देखकर श्रद्धान्वित हो आश्चर्य से नतमस्तक हो रहा था ।

दिनांक : २९ की शाम को पूज्य बापूजी वायुयान द्वारा अहमदाबाद के लिये रवाना हुए ।

अहमदाबाद आश्रम में मनाये गये गुरुपूर्णिमा महोत्सव का वर्णन पृष्ठ ७ पर आ चुका है ।

'ऋषि प्रसाद सप्ताह' अभियान : दिनांक १० जुलाई को **कोटा** समिति के द्वारा आयोजित 'ऋषि प्रसाद सप्ताह' के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए नगरनिगम, कोटा की महापौर श्रीमती सुमन शृंगी ने कहा कि ***'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के माध्यम से कोटा शहर का वातावरण बदलेगा ।*** उन्होंने कहा कि *पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के सुप्रवचनों से संयोजित यह मासिक पत्रिका समाज के आमूल परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी ।* कोटा नगर विकास न्यास के चेयरमेन श्री हरिकृष्ण जोशी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि *आज के मशीनी युग में यह मासिक पत्रिका सभी सद्ग्रन्थों का सार संकलित कर समाज में जागृति लाने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है ।*

बड़ौदा समिति शहर को दो भागों में बाँटकर एवं परस्पर सात्त्विक प्रतिस्पर्धा की भावना जगाकर जोर-शोर से 'ऋषि प्रसाद' के सदस्यता अभियान में लग गयी है ।

राजकोट समिति ने 'ऋषि प्रसाद सप्ताह' कार्यक्रम के अन्तर्गत 'ऋषि प्रसाद' के नये बने आजीवन सदस्यों के कल्याण हेतु विशेष योजना प्रारम्भ की है ।

औरंगाबाद समिति के सदस्यों ने 'ऋषि प्रसाद ज्ञानसत्र' के उद्घाटन दिवस पर ११,००० नये सदस्यों के घर इस पत्रिका के द्वारा पूज्यश्री का संदेश पहुँचाने का संकल्प किया है ।

लुंधियाना समिति इस ज्ञानसत्र के दौरान ११,००० नये सदस्य बनाने के साथ ही खूब पुराने सदस्यों को पुनः सदस्य बनाकर इस अध्यात्मयात्रा से जोड़ने के लिये विशेष प्रयास कर रही है ।

धुलिया, अमरावती, रायपुर, आणंद, इन्दौर एवं अहमदाबाद में मेमनगर, वाड़ज समिति द्वारा भी 'ऋषि प्रसाद सप्ताह' आयोजन के समाचार मिले हैं ।

विभिन्न समितियों द्वारा 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्य बनाने के निर्धारित लक्ष्यांक इस प्रकार हैं :

बड़ौदा	: २०,००० सदस्य	हैद्राबाद	: १०,००० सदस्य
अमरावती-वर्धा	: १३,००० सदस्य	इन्दौर	: ७,००० सदस्य
राजकोट	: ११,००० सदस्य	गांधीनगर	: ५,००० सदस्य
रायपुर	: १०,००० सदस्य	मेमनगर-वाड़ज	: ५,००० सदस्य

पू. बापू के सत्संग कार्यक्रमों के लिए देखें पृष्ठ १८

संत श्री आसारामजी आश्रम के बालयोगी श्री नारायण स्वामी के समक्ष संस्था द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों के बारे में अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा।

⬆ कुप्रचार करनेवालों ने नारेबाजी की, मोर्चे निकाले, आश्रम पर अनर्गल दोषारोपण किये किन्तु उनके टोले में तो ४०-५० लोग भी नहीं थे जबकि ता. १७-८-९६ शनिवार के दिन निकाली गई संकीर्तन यात्रा में १५ से २० हजार साधकों-भक्तों ने भाग लेकर कुप्रचारवालों को दिखा दिया कि तुम्हारी कुप्रचार की कूटनीति भक्तों की श्रद्धा तोड़ नहीं सकती अपितु श्रद्धा महाश्रद्धा में बदल रही है... ऐसा परिचय दिया सूरत की धर्मप्रिय जनता ने। ओ कुप्रचारकों! सुधरो। आश्रम को बदनाम करने का षड्यंत्र कब तक चलाओगे ?

भारतीय संस्कृति के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, संत, महंत, मंडलेश्वर, त्यागी, वैरागी और समाज-सुधारक पू. बापूजी से प्रेरणा पाते हुए। ➡